भास्कर 1/10/25 पेज 20

कार्यक्रम • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में चल रहा हिंदी चेतना माह

हिंदी को बढ़ावा देने को विश्वविद्यालय के सभी कार्य हिंदी में संपादित करने की जरूरत: वीसी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में चल रहा हिंदी चेतना माह प्रमाण पत्र वितरण के साथ ही मंगलवार शाम को संपन्न हो गया। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ.पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय के सभी कार्य को हिंदी में संपादित करने की जरूरत है। इससे लोगों का मातृभाषा से लगाव बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि भारत वर्ष में ही हिंदी दिवस मनाने की आवश्यकता महसूस हो रही हैं। हिंदी विशिष्ट भाषा ही नहीं वरन भारत की शान भी है। विवि के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों से आग्रह करते हुए उन्होंने कहा कि पत्राचार का कार्य सौ प्रतिशत हिंदी भाषा में ही करने की जरूरत है। विवि में कार्य बहुत अधिक होता है जबकि रिपोर्टिंग नगण्य है। समापन सत्र को संबोधित करते हुए प्रबंध बोर्ड के सदस्य जयकृष्ण झा ने कहा कि विवि में वैज्ञानिक एवं किसानों के बीच बेहतर संवाद स्थापित करने की दिशा में पहल करने की आवश्यकता है। कोई भी बड़ा से बड़ा कार्य में उत्पन्न विवाद बेहतर संवाद स्थापित करने से ही सहजता के साथ सम्पन्न हो जाता है। कलसचिव डॉ.मृत्यंजय कुमार ने अपनी 39 वर्षों के यात्रा के अंतिम क्षण में हिंदी चेतना मास के समापन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दी को जीवनशैली बनाते हुए कार्यशैली में परिवर्तित करने की आवश्यकता है। राजभाषा अधिकारी डा.शंकर झा ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। निदेशक शिक्षा डॉ.यूएस बेहरा ने कहा कि विवि के विभिन्न कार्यों में हिंदी का समावेश जरूरी है। डीन टीसीए ढोली डा. पीपी सिंह ने कहा कि हिन्दी विश्व की पटल पर सबसे सरल भाषा है। डीन पीजीसीए डॉ.मयंक राय ने कहा कि छात्र छात्राओं के थेसिस की एब्सट्रैक्ट को हिंदी में लिखने की शुरुआत हो चुकी है।

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग की ओर से 5 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलो में आने वाले दो दिनों में कहीं- कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। कुछ स्थानों पर मध्यम से भारी वर्षा हो सकती है। वर्षा के साथ हवा तेज चल सकती है। इसके साथ ही वज्रपात होने की भी आशंका है। मौसम विज्ञानी डा . ए . सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह में अधिकतम तापमान में गिरावट आने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
01 अक्टूबर	36.0	25.6
02 अक्टूबर	36.0	26.0
दरभंगा		
01 अक्टूबर	36.0	26.0
02 अक्टूबर	36.5	26.0
पटना		
01 अक्टूबर	37.8	27.6
02 अक्टूबर	37.8	27.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 01-10-2025

विविधताओं का देश है भारत, एकता इसकी विशिष्टता : वीसी

कार्यक्रम

- विवि में हिन्दी चेतना माह का हुआ समापन, प्रतिभागी हुए पुरस्कृत
- कुलसचिव ने हिन्दी की उपयोगिता व महत्व पर विस्तार से चर्चा की

मंगलवार को कृषि विवि में संबोधित करते कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय व अन्य।

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि भारत विविधताओं का देश होने के बावजूद हम एक हैं। यहीं हमारी विशिष्टता है। हम भारतवासी हिन्दी दिवस मनाते हैं।

यह हमें एक दूसरे से जोड़ता है। इसे हिन्दी मय बनाने के लिए अधिक से अधिक कार्यो में हिन्दी का उपयोग बढ़ाने की जरूरत है। खासकर हिन्दी में पत्राचार को बढ़ावा समय की मांग है। वे मंगलवार की शाम विवि के विधापति सभागार में हिन्दी चेतना माह के समापन सत्र में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सामुहिक प्रयास से हिन्दी को बढ़ावा दिया जा सकता है। उन्होंने एआई व अन्य नये तकनीक की मदद से हिन्दी को और सरल बनाने पर जोड़ दिया। कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार ने हिन्दी की उपयोगिता व उसके महत्व पर विस्तार से चर्चा की। इस अवसर में प्रबंधन बोर्ड के सदस्य जयकृष्ण झा, डीन डॉ. मयंक राय, डॉ. पीपी सिंह, डॉ.पीपी श्रीवास्तव, निदेशक शिक्षा डॉ. उमाकांत बेहरा, नियंत्रक डॉ. पीके झा आदि ने भी संबोधित किया। इस दौरान बीते एक माह में आयोजित प्रतियोगिताओं में चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। प्रगति प्रतिवेदन विवि के राजभाषा पदाधिकारी डॉ. शंकर झा ने प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. ईश प्रसाद एवं धन्यवाद डॉ. रंजीत कुमार ने किया। मौके पर डीन डॉ. उषा सिंह, निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह, डॉ. आरके झा, डॉ.पीके प्रणव, डॉ. सतीश कुमार सिंह, डॉ. महेश कुमार, डॉ. कुमार राज्यबर्द्धन व अन्य मौजूद थे।

पुरानी धरोहरों को सहेजने की जरूरत : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित दुर्गा पूजा समिति पूसा स्टाफ क्लब में महाष्टमी को कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने दीप प्रज्वलित कर मेला का शुभारंभ किया. कुलपति मां भगवती के दर्शन कर अभिभूत हुए. उद्घाटन के उपरांत बच्चों के माध्यम से नृत्य गायन कार्यक्रम की शुरुआत में सचिव, अध्यक्ष ने कुलपति का पुष्प गुच्छ शॉल एवं मोमेंटो से स्वागत किया. इसके बाद बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया. सभी सफल बच्चों को कुलपति ने प्रमाण पत्र एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया. कार्यक्रम के बाद कुलपति ने कहा कि आने वाली पीढ़ी में धीरे-धीरे जो पुराने धरोहर हैं. वह खत्म होती जा रही है. उसको याद दिलाने की जरूरत है. इस तरह के कार्यक्रम को लोगों तक पहुंचाने की आवश्यकता है. जिससे पूजा के दौरान अधिक से अधिक प्रतिभागी हिस्सा ले पायेंगे. साथ ही कुलपति डॉ पांडेय ने मिथिला स्टाल सहित कमेटी को बेहतरी के लिए आवश्यक निर्देश देते हुए सारे कमेटी के सदस्यों को सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया. मौके पर संयोजक श्रीराम सिंह, अध्यक्ष सुशील कुमार सिंह, सचिव शिरीष कुमार चौधरी, कोषाध्यक्ष जयप्रकाश, राज सिंह, शैलेंद्र चौधरी, रितेश कुमार, चंदन, कुंदन, मनीष, विनय, अनुज, राम कुमार, मुख्य यजमान पूर्व मुखिया प्रदीप कुमार मंडल आदि लोग उपस्थित थे.

कमेटी के सदस्यों के साथ कुलपति.

प्रभात खबर
Saturday, October 4, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68e0212711371d03b52b5965

नृत्य प्रतियोगिता में रिद्धिमा रही अव्वल, दिखायी प्रतिभा

अव्वल प्रतिभागी को पुरस्कृत करते अतिथि .

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दुर्गा पूजा समिति के द्वारा बच्चों के नृत्य प्रतियोगिता का समापन किया गया. इसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ आरके झा निदेशक प्रसार शिक्षा एवं सर्किल इंस्पेक्टर एवं पूसा थाना प्रभारी रमेश कुमार को फूल एवं शॉल से सचिव एवं अध्यक्ष ने सम्मानित किया. इसके बाद छोटे छोटे बच्चों के माध्यम से संस्कृति कार्यक्रम किया गया. इसमें बच्चों के नृत्य से सभी श्रद्धालु का मन मोह लिया. इस नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रिद्धिमा सिंह, आव्या वत्स, ईशान बाबू, द्वितीय स्थान श्रेया कुमारी, प्रिया कुमारी, राधिका कुमारी, तृतीय स्थान नैना मिश्रा एवं राहुल को दिया गया. मौके पर अध्यक्ष सुशील कुमार सिंह, सचिव शिरीष कुमार चौधरी, कोषाध्यक्ष जयप्रकाश राय, संयोजक राम सिंह, उपाध्यक्ष अनिल कुमार, उपसचिव रविंद्र स्वरूप उर्फ लालू, पूर्व मुखिया प्रदीप कुमार, मंडल मीडिया प्रभारी रिंकू सिंह, प्रभात कुमार चौधरी, शैलेंद्र चौधरी, विनय कुमार, मनीष कुमार, चंदन कुमार, अमित राज सिंह, मुकेश कुमार, राम कुमार मौजूद थे.

प्रभात खबर
Saturday, October 4, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68e0212711371d03b52b5965

भास्कर 5/10/25 पेज 22

नृत्य प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पुरस्कृत

बच्चों को पुरस्कृत करते निदेशक प्रसार शिक्षा व अन्य।

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के परिसर में चल रहा दुर्गा पूजा महोत्सव विजयादशमी के साथ ही गुरुवार को संपन्न हो गया। महोत्सव के दौरान विवि से जुड़े बच्चों के लिए नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शुक्रवार को नृत्य प्रतियोगिता का समापन समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. आरके झा मौजूद थे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्किल इंस्पेक्टर एवं पूसा थानाध्यक्ष रमेश कुमार मौजूद थे। पूजा समिति से जुड़े लोगों ने सभी अतिथियों को फूल एवं सॉल देकर सम्मानित किया। नृत्य में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को अतिथियों ने संयुक्त रूप से पुरस्कृत किया। नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रिद्धिमा सिंह, आव्या वत्स व ईशान बाबू ने प्राप्त किया। जबकि द्वितीय स्थान श्रेया कुमारी, प्रिया कुमारी एवं राधिका कुमारी ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान नैना व राहुल ने प्राप्त किया।

दैनिक जागरण 5/10/25 पेज 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 8 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में दो दिनों में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। कुछ स्थानों पर अच्छी बारिश हो सकती है। वर्षा के दौरान कई स्थानों पर तेज हवा चल सकती है। साथ ही वज्रपात होने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया इस सप्ताह तापमान में गिरावट आने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
04 अक्टूबर	31.0	23.6
05 अक्टूबर	31.0	24.0
	दरभंगा	
04 अक्टूबर	31.0	24.0
05 अक्टूबर	31.5	24.0
	पटना	
04 अक्टूबर	33.8	25.6
05 अक्टूबर	33.8	25.6

डिग्री सेल्सियस में

नृत्य प्रतियोगिता में चयनित प्रतिभागी हुए पुरस्कृत

आयोजन

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा परिसर स्थित स्टाफ क्लब में दुर्गा पूजा समिति के तत्वाधान में आयोजित बच्चों की 3 दिवसीय नृत्य प्रतियोगिता गुरूवार की देर रात संपन्न हो गई। समापन सत्र में चयनित छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

इस दौरान मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद विवि के नवनियुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ आरके झा, सर्किल इंस्पेक्टर संदीप कुमार, पूसा थानाध्यक्ष रमेश कुमार मौजूद थे। इससे पूर्व बच्चों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत कर मौजूद लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पुरस्कृत प्रतिभागियों में रिद्धिमा सिंह, आव्या वत्स, ईशान बाबू प्रथम, श्रेया कुमारी, प्रिया कुमारी, राधिका कुमारी द्वितीय, नैना मिश्रा एवं राहुल को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संचालन रमेन्द्र स्वरूप उर्फ लल्लू जी ने किया। मौके पर संयोजक श्रीराम सिंह, अध्यक्ष सुशील कुमार सिंह, सचिव शिरीष कुमार चौधरी, कोषाध्यक्ष जयप्रकाश राय, उपाध्यक्ष अनिल कुमार, पूर्व मुखिया प्रदीप कुमार मंडल, मीडिया प्रभारी रिंकू सिंह, प्रभात कुमार चौधरी, शैलेंद्र चौधरी, विनय कुमार, मनीष कुमार, चंदन कुमार, अमित राज सिंह, मुकेश कुमार, राम कुमार आदि मौजूद थे। इससे पूर्व समारोह का उद्घाटन कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने किया।

गुरुवार को पूसा स्टाफ क्लब में बच्चे को पुरस्कृत करते निदेशक प्रसार शिक्षा व अन्य।

Hindustan 04-10-2025

कुलसचिव व वरीय तकनीकी अधिकारी को दी गई विदाई

पूसा, निसं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के विधापति सभागार में विदाई सह सम्मान समारोह आयोजित की गई। इसमें कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार एवं वरीय तकनीकी पदाधिकारी मनोज कुमार को सेवानिवृति के बाद समारोह पूर्वक विदाई दी गई। अध्यक्षता कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने किया।

मौके पर कुलपति ने कहा कि सेवानिवृत हो रहे दोनों लोगों ने विवि में काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि कुलसचिव की कर्मठता, विवि के प्रति समर्पण भाव एवं बेदाग छवि यादगार रहेगी। उन्होंने कहा कि विवि को गति व पहचान देने में उनकी कार्यकुशलता का अहम योगदान रहा है। कहा विवि सेवानिवृत कर्मियों की सेवा लेने की योजना बना रहा है। कहा कि कुलसचिव के प्रयास से ही विवि परिसर में करीब 17 किमी. सड़क पास हो चुकी है। कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार ने कहा कि आत्मविश्वास, आत्मबल व आत्मसंतुष्टि से कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उन्होंने वैज्ञानिको को कमिटमेंट के साथ कार्य करने पर ब दिया।

कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार को विदाई देते कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय।

Hindustan 04-10-2025

नौ अनुकंपा आश्रितों की सूची जारी, नियुक्ति का रास्ता साफ

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि प्रशासन ने अनुकंपा आश्रितों की नियुक्ति की मांग को पूरा करने के लिए 9 लोगों की चयन सूची जारी की है।

इस संदर्भ में निवर्तमान कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार ने 30 सितंबर को आदेश जारी किया है। जिसमें उन्होंने उच्च स्तरीय कमेटी की डीओपीटी नियम के अनुसार की गई अनुशंसा का हवाला देते हुए चयन सूची जारी की है। इसमें आवेदिका संगीता देवी (राम चन्द्र कुमार), चंदा देवी (शंभू साह), रंजीत कुमार (फकीरा राम), मो. मोईनुल (गफूर), अर्जुन कुमार सहनी (चन्देश्वर सहनी), नवीन कुमार ठाकुर (सिद्धू शरण ठाकुर), गुड्डू कुमार (महेश्वर राय), रंजीत कुमार (महावीर राय), कुमार अभिषेक (मनोज कुमार मिश्र) चयनित लोगों में शामिल हैं।

चयन सूची जारी होने के साथ ही विवि में आश्रितों की नियुक्ति का रास्ता साफ हो गया है।

नये कुलसचिव बने डॉ. पीके प्रणव

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के नये कुलसचिव डॉ. प्रभंजन कुमार प्रणव (पीके प्रणव) बनाये गये हैं। वे सेवानिवृत हुए डॉ. मृत्युंजय कुमार की जगह ले रहे हैं। इसके अलावा प्राध्यापक डॉ. सतीश कुमार सिंह को उपकुलसचिव (स्थापना), पीजीसीए से जुड़े प्राध्यापक डॉ. संजय कुमार साहू को चीफ विजलेंस आफिसर बनाया गया है। वहीं कृषि अभियंत्रण एवं प्रौधौगिकी महाविद्यालय से जुड़े सह प्राध्यापक डॉ. सुभाष चन्द्रा को फार्म मशीनरी टेस्टिंग सेन्टर का टेस्टिंग ऑर्थोरिटी बनाया गया है।

Hindustan 04-10-2025

प्रतिभागियों को किया गया पुरस्कृत

पूसा। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिक्षेत्र में स्टाफ क्लब दुर्गा पूजा समिति की ओर से आयोजित दुर्गा पूजा शांति पुर्ण एवं सौहार्द पूर्ण माहौल में मनाया गया।इस दौरान छोटे छोटे बच्चों के लिए आयोजित रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान बच्चों ने अनेकता में एकता से जुड़े नृत्य की प्रस्तुति दी इसमें उत्‍.ष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ आरके झा ने प्रतिभागियों को उत्साह वर्धन करते हुए पुरस्कृत किया। उन्होंने ने कहा कि प्रतियोगिता से बच्चों के प्रतिभा में निखार आता है। इस दौरान स्थानीय थाना अध्यक्ष रमेश कुमार, सुशील कुमार सिंह, शिरीष कुमार चौधरी, जयप्रकाश राय, राम सिंह, अनिल कुमार, रविंद्र स्वरूप, प्रदीप कुमार मंडल रिंकू सिंह, प्रभात कुमार, शैलेंद्र चौधरी, विनय कुमार, मनीष कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित थे। वहीं स्थानीय प्रखंड क्षेत्र के पूजा स्थलों में स्थापित दुर्गा की प्रतिमा को लोगों ने नम आंखों से विदाई दिया।

Rashtriya Sahara 04-10-25

कृषि • जूस बनाने वाली कंपनी की ओर से अनानास की खरीदारी सालों भर किए जाने से मार्केट में अधिक डिमांड

किसान अनानास की व्यावसायिक खेती कर कमा सकते हैं अच्छा मुनाफा : कृषि वैज्ञानिक

दैनिक भास्कर - 6/1/25 P-2

भास्कर न्यूज|पूसा

अनानास महत्वपूर्ण व्यवसायिक फल फसलों में से एक है। इसकी खेती अनेक प्रकार की जलवायु में आसानी से की जा सकती है। इसकी खेती ऐसे तो किसान सभी तरह के मिट्टी में कर सकते हैं लेकिन खासकर दोमट मिट्टी इसके लिए काफी अच्छी मानी जाती है। किसान इसकी व्यवसायिक खेती शुरू कर बेहतर से बेहतर मुनाफा कमा सकते हैं। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने कहीं। उन्होंने बताया कि अनानास एक ब्राजील मूल का पौधा है। इसके फल में कई तरह के महत्वपूर्ण पोषक तत्व पाएं जाते है जो शरीर के अंदर मौजूद विकारों को बाहर निकालने का काम करते है। उन्होंने बताया कि इसका तना काफी छोटा एवं इसकी गांठ काफी मजबूत होती है। अनानास में प्रचुर मात्रा में कैल्शियम पाया जाता है जो मानव शरीर को पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा प्रदान करता है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि भारत में

अनानास की खेती।

अनानास की खेती केरल, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, गोवा, महाराष्ट्र, बिहार आदि राज्यों में की जा रही हैं। एक अनुमान के मुताबिक अनानास का कुल वार्षिक उत्पादन 14.6 मिलियन टन है। भारत दुनिया में अनानास का पांचवां सबसे बड़ा उत्पादक है। उन्होंने बताया कि अनानास के अन्य महत्वपूर्ण उत्पादक देशों में थाईलैंड, फिलीपींस, ब्राजील, नाइजीरिया, मैक्सिको, इंडोनेशिया, कोलंबिया संयुक्त राज्य अमेरिका आदि शामिल है। उन्होंने बताया कि बिहार के कोसी क्षेत्र में किसान लगभग 15 से 16 हजार हेक्टेयर में अनानास की खेती कर रहे हैं। यहां के किसान पारंपरिक खेती के अलावे अनानास की खेती कर इसे आमदनी का एक बेहतर जरिया बनाने में जुटे हैं।

अनानास की इन किस्मों की खेती अधिक लाभकारी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि देश में अनानास की किस्में केव, जायंट केव, क्वीन, मॉरिशस, जलधूप, रानी, विशाल केव आदि तरह के किस्मों की खेती की जा रही हैं। ये सभी किस्में अनानास की व्यावसायिक किस्में है जिनकी खेती कर किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। देश की कई जूस बनाने वाली कंपनियां इन किस्मों के अनानासों की खरीदारी काफी अच्छे रेट पर और अधिक मात्रा में प्रत्येक वर्ष करती हैं। उन्होंने बताया कि मेघालय, केरल, असम, त्रिपुरा, मणिपुर जैसे राज्यों के किसान दिसंबर तक अनानास की खेती बेहद आसान ढंग से करते हैं। इस तरह की खेती से किसानों की आमदनी बढ़ेगी और रोजगार भी मिलेगा।

दिसंबर तक किसान कर सकते हैं अनानास की खेती

वैज्ञानिक ने बताया कि अनानास ब्रोमेलियासी परिवार का एक उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय फल है जो दुनिया के लगभग एक तिहाई क्षेत्र में उगाया जाता है। भारत में अनानास उगाने का मुख्य समय जुलाई से दिसंबर तक का है। अनानास की फसल को कटाई के लिए विकसित होने में लगभग 18 से 24 महीने का समय लगता हैं। उन्होंने बताया कि स्थानीय किसानों को भी पारंपरिक फसलों के साथ-साथ अनानास जैसे व्यवसायिक फसलों को लगाकर अच्छा मुनाफा हासिल करने की जरूरत हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 8 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में दो दिनों में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। कुछ स्थानों पर अच्छी बारिश हो सकती है। वर्षा के दौरान कई स्थानों पर तेज हवा चल सकती है। साथ ही वज्रपात होने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया इस सप्ताह तापमान में गिरावट आने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
06 अक्टूबर	29.0	23.0
07 अक्टूबर	29.0	23.6
	दरभंगा	
06 अक्टूबर	29.0	23.6
07 अक्टूबर	29.5	23.6
	पटना	
06 अक्टूबर	31.7	24.5
07 अंक्टूबर	31.8	24.9

डिग्री सेल्सियस में

गन्ना की एकल गांठ पौधे की खेती में बढ़ती लोकप्रियता : निदेशक

किसानों को सीडलिंग देते वैज्ञानिक .

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित अनुसंधान संस्थान परिसर में गन्ने की एकल गांठ पौधे खेती में किसानों के बीच लोकप्रियता बढ़ते हुए अग्रसर है. संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने बताया कि बिहार सरकार हर एक चीनी मिल में एकल गांठ विधि से रोपाई करने पर सब्सिडी दे रही है.

एक तरफ गन्ना की खेती का रकवा बढ़ाने की दिशा में पहल की जा रही है. दूसरी ओर बेहतर गन्ने की किस्म का किसानों के खेत में अभाव देखा जा रहा है. जिससे की राजेंद्र गन्ना 1, 2 एवं 5 प्रभेद का किसानों के खेत में विस्तार संभव नहीं हो पाया है. बिहार सरकार के मुख्यमंत्री गन्ना विकास कार्यक्रम के तहत 16 प्रभेदों को जगह मिली है. इसमें ईख अनुसंधान संस्थान के प्रभेदों को शामिल किया गया है. जिसका नाम सीओपी 9301, 112, राजेंद्र गन्ना 1, एवं बीओ 153 है. इन प्रभेदों को भी किसानों के खेत में लगाने की आवश्यकता है. इसी कड़ी में इन्हीं प्रभेदों की सीडलिंग तैयार कर बिहार के किसानों को दी जा रही है. इसमें सारण के देवेंद्र प्रसाद सिंह ने 8 हजार एकल गांठ ले जा रहे हैं.

वैशाली जिला अंतर्गत अंजनी गांव के रहने वाले डॉ आलोक कुमार ने संस्थान के प्रयोगशाला में लगे एकल गांठ विधि देखकर अपने क्षेत्र में जागरूकता के साथ-साथ अपने खेतों में भी लगाने का निर्णय लिया है. बीते माह झारखंड के मोबाइल एग्रीकल्चर एवं सर्विस के सचिव विजय भरत में 6300 एकल गांठ ले गये हैं. जिसका शत-प्रतिशत अंकुरण सही साबित हुआ है. विभागाध्यक्ष सह नोडल अधिकारी डॉ बलवंत कुमार ने बताया कि संस्थान के गन्ना उत्पादन प्रक्षेत्र में निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने सतत भ्रमण करते रहते हैं. बीते एक वर्ष में संस्थान गन्ना के क्षेत्र में बहुउपयोगी कार्य कर काफी लोकप्रियता हासिल की है. मौके पर बृजभूषण सिंह सहित अन्य कर्मी मौजूद थे.

Prabhat Khabar 07-10-2025

भास्कर 8/10/25 पेज 13

पूर्वानुमान • अधिकतम तापमान 30-32 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम तापमान 24-25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना

मौसम ने ली करवट : सुबह में देर तक छाया रहा कोहरा और ठंड का भी अहसास

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

आमतौर पर 9 से 12 अक्टूबर तक मौसम के शुष्क बने रहने की सम्भावना है। मौसम विभाग, पूसा के वैज्ञानिक के अनुसार इस अवधि में अधिकतम तापमान 30-32 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 24-25 डिग्री सेल्सियस बने रहने की सम्भावना है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90-95 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 50-60 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस बीच पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 8 से 10 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। हालांकि मंगलवार की सुबह ठंड का पहला आसमान में छाया हुआ घना कोहरा देखा गया। मंगलवार का अधिकतम तापमान 32.0 और न्यूनतम तापमान 23.0 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। ऊचांस खेतों में अगात रबी फसलों की बुआई के लिए वर्षा उपरान्त खेतों की तैयारी शुरु करें।

मंगलवार सुबह देर तक घना कोहरा छाया रहा।

गन्ना, मसूर व मटर के लिए समय उपयुक्त

शरदकालीन गन्ना, मसूर, मटर, राजमा, मेथी, लहसुन, धनियां, राई एवं सुर्यमुखी फसलों के समय से बुआई के लिए वर्षा उपरान्त खेतों की तैयारी शुरु करें। खेत से सटे मेड़ों, नालों एवं आस-पास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलो की साफ-सफाई अवष्य करे, ताकि इन जंगलों में छिपे कीट व रोगों के कारक आदी सम्पूर्ण रुप से नष्ट हो जाए। गोबर की सडी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेरकर एवं जुताई कर मिला दें।

धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की निगरानी करें। इस कीट के षि एवं प्रौढ़ दोनों पौधों के बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते है तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुंचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विषेश। प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 12 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में मौसम शुष्क बने रहने की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा . ए . सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह में अधिकतम तापमान में गिरावट आ सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 30–32 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 24–25 डिग्री के आसपास रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
08 अक्टूबर	32.0	23.0
09 अक्टूबर	32.0	23.6
दरभंगा		
08 अक्टूबर	32.0	23.6
09 अक्टूबर	32.3	23.6
पटना		
08 अक्टूबर	31.7	24.5
09 अक्टूबर	31.8	24.9

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 08-10-2025

मशरूम के 52 प्रोडक्ट विकसित :डीआर

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक अनुसंधान (डीआर) डॉ. अनिल कुमार सिंह ने कहा कि विवि ने मशरूम क्षेत्र में शोध के साथ बेहतर व्यवसायिक प्लेटफार्म तैयार कर एक नई दिशा व विकास गति को तेज किया है। जिससे मशरूम उत्पादकों व इससे जुड़े कारोबार के प्रति लोगों का झुकाव लगातार बढ़ रहा है।

इस क्षेत्र में मिली सरकार व विवि की सहायता ने इस कारोबार से जुड़े लोगों को नई उर्जा दी। सामुहिक प्रयास से मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में बिहार देश में अग्रणी बन गया है। वे मंगलवार को विवि के एडवांस सेन्टर ऑफ मशरूम रिसर्च परिसर में विभिन्न जिलों से आये प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था बटन उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित 7 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का।

मंगलवार को कृषि विवि के मशरूम केन्द्र में विभिन्न जिलो से आये प्रशिक्षु।

उन्होंने कहा कि विवि ने अब तक मशरूम के 52 तरह के प्रोडक्ट विकसित किये हैं। अब इंटरपेनियोरशिप को गति देने में विवि प्रयासरत है। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. आरके झा ने कहा कि मसरूम अब सालो भर उगाया जा रहा है। खेती बगैर खेत की इसकी पहचान बन गई है। छोटे व मध्यम किसानों के लिए आमदनी का बेहतर विकल्प है। मशरूम विशेषज्ञ डॉ. दयाराम ने कहा कि मशरूम की 10 प्रजाति को उगाया जा रहा है।

Hindustan 08-10-2025

गन्ना उत्पादन में किसानों का बढ़ रहा रुझान: डीईई

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा (डीईई) डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि ईंख उत्पादन व इससे जुड़े व्यवसाय को बढ़ावा समय की मांग है। यह लाभकारी खेती है।

अब इसके उत्पादन के अलावा गुड़ उद्योग क्षेत्र में विस्तारीकरण में किया जा रहा कार्य किसानों को लगातार आकर्षित कर रहा है। जरूरत है वैज्ञानिक तकनीकों एवं विभागीय सहयोग का लाभ लेकर इसके कारोबार को गति देने की। वे मंगलवार को विवि के ईंख अनुसंधान केन्द्र, पूसा के सभागार में राज्य के 5 जिलों से आये गन्ना उत्पादकों, एटीएम, बीटीएम, कृषि समन्वयकों एवं प्रखंड उद्यान पदाधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। मौका था गन्ना में समेकित कीट -व्याधि प्रबंधन विषय पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन समारोह का। निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह ने कहा कि गन्ना औधौगिक फसल है। सरकार ने इसके विकास के लिए अलग से विभाग व मंत्रालय बनाया है। डीन डॉ. मयंक राय ने कहा कि समेकिट कीट- व्याधि प्रबंधन आवश्यक एवं महत्वपूर्ण टॉपिक है।

- पांच जिलों के गन्ना उत्पादक व प्रसार कार्यकर्ता ले रहे हैं भाग

Hindustan 08-10-2025

किसानों के सहयोग से ही तकनीक को खेतों तक पहुंचाना संभव : डॉ सिंह

संबोधित करते डीआर डॉ एके सिंह.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के सभागार में बटन मशरूम उत्पादन तकनीकी विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने कहा कि किसानों के सहयोग से ही शोध किये गये नवीनतम प्रभेद का बीज एवं तकनीकी ज्ञान को खेत तक पहुंचाना संभव है. रासायनिक खादों के प्रयोग से उत्पादन एवं उत्पादकता दर को बढ़ाने में किसानों को कामयाबी मिली है. इसके साथ ही देशभर के लोगों के परिवार में अधिकाधिक रोगों की तादाद बढ़ गई है. इससे निबटने के लिए अब किसानों को प्राकृतिक खेती की तरफ मुखातिब होने की जरूरत है. खाद्य सुरक्षा के उपरांत अब पोषण सुरक्षा की दिशा में वैज्ञानिक सतत प्रयत्नशील हैं. ताकि कुपोषण दर को घटाया जा सके. इसी कड़ी में मशरूम की खेती को बढ़वा दिया जा रहा है. उन्होंने कहा कि विवि मशरूम के क्षेत्र में 52 तरह के उत्पादों का निर्माण कर ब्रांडिंग कर चुका है. विशिष्ट अतिथि के रूप में सत्र को संबोधित करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार सिंह ने कहा कि मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में बिहार आज नंबर वन बना हुआ है. फिलवक्त मशरूम की 10 प्रजाति उगाया जा रहा है.संचालन सेंटर प्रभारी डॉ आरपी प्रसाद ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ आरपीके राय ने दिया. मौके पर बिहार के विभिन्न जिले से आए हुए 40 प्रतिभागियों के अलावा मुकेश कुमार, मुन्नी, निशा आदि मौजूद थे.

Prabhat Khabar 08-10-2025

प्रतियोगिता में भाग लेने को शिशु सदन के बच्चे रवाना

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित राजेंद्र शिशु सदन के बच्चों को जिला स्तरीय विद्यालय खेल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए रवाना किया गया है. प्राचार्या पुष्पा कुमारी ने बताया कि बच्चे अपने स्कूल परिवार से बाहर निकल कर अपनी प्रतिभा को और निखार पायेंगे.

साथ ही अन्य बच्चों के साथ खेलकर अपना मूल्यांकन कर सकेंगे. प्रतियोगी भावना से बाहर में खेले गये खेल से बच्चों में मानसिक शारीरिक एवं बौद्धिक विकास संभव हो पाता है. अधिक से अधिक और बेहतर सीखने के प्रवृति से भी परिपूर्ण होते हैं.

फोटो संख्या : 17 हरी झंडी दिखाकर रवाना करती प्राचार्या .

गन्ना उत्पादन को रकबा बढ़ाने की जरूरत : डॉ झा

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित ईख अनुसंधान संस्थान के सभागार में गन्ना में समेकित कीट व्याधि प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए नवनियुक्त प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि गन्ना के क्षेत्र में बेहतर एवं ज्यादा से ज्यादा उत्पादन के लिए बिहार सरकार के सहयोग से रकवा बढ़ाने की जरूरत है. जिससे चीनी मिलों को अधिकाधिक गन्ना की आपूर्ति संभव हो सके. गन्ने की खेतों में कीट-व्याधियों को नियंत्रण करने के लिए कीटनाशक का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किया जाता है. जिसका दुष्प्रभाव मानव जीवन पर देखा जा रहा है. स्वागत भाषण करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने कहा कि गन्ना के सभी अंगों का भलीभांति उपयोग किया जा रहा है. कैश क्रॉप एवं इंडस्ट्रियल क्रॉप के रूप में गन्ना अपना पहचान विकसित कर चुका है. चीनी का दुष्प्रभाव भी देखा जा रहा है. गुड़ एक औषधि के रूप में अपना परिणाम दे रहा है. डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय ने कहा कि इस प्रशिक्षण में गन्ना विकास से संबंधित चहुंमुखी ज्ञान प्राप्त होगा. गन्ने की फसलों में कीट व्याधि का प्रकोप हो जाने पर उसे नियंत्रण करना लाजमी होता है. डीआर डॉ एके सिंह ने कहा कि गन्ना एक औद्योगिक फसल है. विवि के अंतर्गत आने वाली तीन पीलर अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार किसान हित में कृषि से आमदनी बढ़ाने की दिशा में सतत प्रयत्नशील है. संचालन वैज्ञानिक सुनीता कुमारी मीणा ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ एसके सिंह ने दिया. मौके पर डॉ मो. मीनातुल्लाह, डॉ सीके झा, डॉ नवनीत कुमार, डॉ डीएन कामत, डॉ बलवंत कुमार, उद्यान पदाधिकारी पूसा निधि कुमारी, एटीएम कल्याणपुर रूपम थे.

Prabhat Khabar 08-10-2025

12 अक्तूबर तक मौसम के शुष्क बने रहने की संभावना

समस्तीपुर . डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 09 से 12 अक्टूबर, 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में आमतौर पर मौसम के शुष्क बने रहने की संभावना है. इस अवधि में अधिकतम तापमान 30 से 32 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. वहीं न्यूनतम तापमान 24 से 25 डिग्री सेल्सियस बने रहने की संभावना है.

Prabhat Khabar 08-10-2025

भास्कर 9/10/25 पेज 14

फल, सब्जी व फूल की खेती के अलावा धान, गेहूं, दलहन, तेलहन किसानों के लिए फायदेमंद

आईएआरआई पूसा बिहार के लिए ऐतिहासिक धरोहर, इसे सहेजने की है जरूरत : डॉ. प्रियरंजन

भास्कर न्यूज | पूसा

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र पूसा के सभागार में अनुसूचित जाति उपपरियोजना के अंतर्गत किसानों के लिए कृषि बागवानी फसल उत्पादन में आधुनिक दृष्टिकोण और हालिया विकास विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन संस्थान के अध्यक्ष डॉ. प्रियरंजन कुमार ने किया। इस अवसर पर डॉ. प्रियरंजन ने कहा कि आईएआरआई बिहार के लिए ऐतिहासिक धरोहर है। यहां के किसानों को इसे सम्भाल कर रखने की जरूरत है। इस संस्थान द्वारा अपने परिसर में ही फल, सब्जी एवं फूल की खेती के अलावे धान, गेहूं, दलहन, तेलहन के उन्नतशील व नवीनतम प्रभेदों का बीज तैयार कर किसानों को उपलब्ध कराया जाता है। उन्होंने कहा कि किसान संस्थान से बीज लेकर विभिन्न फसलों की खेती कर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बना सकते है। उन्होंने कहा कि खासकर ग्रामीण महिलाएं अपने घर पर ही पोषण वाटिका लगाकर अपनी आमदनी को बढ़ा सकती है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय पूसा के डीन पीजीसीए डॉ. मयंक राय ने कहा कि ग्रामीण महिलाओं को कृषि बागवानी व्यवसाय से जुड़कर आमदनी बढ़ाने की जरूरत है। ग्रामीण महिला खासतौर से मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन के अलावे वैल्यू एडिशन को अपनाते हुए केले के रेशे से विभिन्न उत्पादों का निर्माण कर स्वरोजगार की दिशा में पहल कर सकती है। फल एवं सब्जी की खेती भी ग्रामीण महिलाओं के लिए बेहतर विकल्प साबित हो सकता है। प्रशिक्षण के मुख्य आयोजक संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. तमोघना साहा ने पौधा में लगने वाले विभिन्न रोग कीट एवं व्याधियों के बारे में विस्तार से किसानों को बताया। प्रशिक्षण के सह आयोजक वैज्ञानिक सतीश नायक एवं डॉ. मो हसनैन ने मंच संचालन किया। मौके पर मुख्य तकनीकी अधिकारी मीरा पांडेय, सहायक प्रशासनिक अधिकारी मनीष कुमार भारती, अभिषेक कुमार, अनिल कुमार, सुरेंद्र कुमार राय आदि मौजूद थे।

प्रशिक्षण में मौजूद किसान।

कृषि • किसान वैज्ञानिक सुझावों को अपनाकर केले में डालें उर्वरक व कीटनाशक का करें प्रयोग

केले से बेहतर पैदावार प्राप्त करने के लिए किसान अक्टूबर से दिसंबर तक बागों का करें वैज्ञानिक तकनीक से प्रबंधन

9/10/25 भास्कर न्यूज | पूसा पेज 13

बिहार के साथ-साथ उत्तर भारत के किसानों ने इस वर्ष जून, जुलाई और अगस्त के महीने में अपने खेतों में उत्तक संवर्धन से केले की रोपाई की है। जून, जुलाई और अगस्त में लगाएं गए केले के पौधे फिलहाल 60 से 90 दिन एवं कुछ 120 दिन के हो गए है। अब केला उत्पादक किसानों के लिए यह जानना बेहद जरूरी है कि वे केले के इन बागों से बेहतर पैदावार प्राप्त करने के लिए अक्टूबर से दिसंबर तक इन बागों का रख रखाव और वैज्ञानिक प्रबंधन कैसे करें। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने कही। उन्होंने बताया कि अक्सर केला उत्पादक किसानों को यह पता नही होता है की

विवि परिसर में लगे बाग।

इस समय केले के बागों में कौन-कौन से रोग के लगने की संभावना होती है तथा उसका उपचार कैसे किया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि दो से चार माह पूर्व लगाएं गए केले के पौधे में सूत्रकृमि रोग के लगने की संभावना काफी अधिक रहती हैं। केला उत्पादक किसान इस रोग की पहचान कर इसे नियंत्रित करने के लिए 40 ग्राम कार्बोफ्यूरॉन प्रत्येक पौधे की दर से प्रयोग करें। इसके अलावे किसान वैसे केले के बाग जो 2 से 3 महीने के हो गए है उसमें गुड़ाई और निराई कराने के बाद उर्वरक की पहली खुराक सौ ग्राम यूरिया, तीन सौ ग्राम सुपर फॉस्फेट और सौ ग्राम एमओपी प्रत्येक पौधे के अनुसार पौधों से लगभग 30 सेंटीमीटर की दूरी पर बेसिन बनाकर में उसमें डालें। उन्होंने बताया कि वैसे किसान जिनके केले के बाग में लगाया गया पौधा चार महीने का हो गया हो तो उसमें किसान एजोस्पिरिलम और फॉस्फोबैक्टीरिया नामक दवाई का 30 ग्राम मात्रा और ट्राइकोडर्मा विराइड नामक दवाई का 30 ग्राम मात्रा तथा 5 से 10 किलोग्राम खूब सड़ी हुई कंपोस्ट तथा गोबर की की खाद प्रत्येक पौधे की दर से प्रयोग करें। हालांकि उन्होंने किसानों को बताया कि केला उत्पादक किसान केले के बाग में रासायनिक उर्वरक और जैव उर्वरकों के प्रयोग के बीच कम से कम 2 से 3 सप्ताह का अंतर जरूर रखें।

आभासी तना भेदक कीट का प्रकोप

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि केले के पौधों पर इस समय आभासी तना भेदक कीट यानी अंडे देने वालर स्टेम वीविल कीट के हमले की संभावना भी बनी रहती हैं। इस कीट को नियंत्रित करने के लिए किसान नीमोसोल दवा का 12.5 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी या क्लोरपाइरीफॉस दवा का 2.5 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर केले के तने पर स्प्रे करें। उन्होंने बताया कि कॉर्म नामक कीट और स्टेम वीविल कीट की निगरानी के लिए किसान एक एकड़ केले के बाग में 40 की संख्या में 2 फीट लंबे अनुदैर्ध्य स्टेम ट्रैप को बाग के विभिन्न स्थानों पर टांगकर रखें। इस ट्रैप में कीट एकत्रित होने लगेंगे जिसे किसान मिट्टी का तेल छिड़ककर अक्सर मार दिया करें। उन्होंने बताया कि किसान केले के खेतों के साथ-साथ आसपास के क्षेत्रों को भी खरपतवार मुक्त रखें और कीट वाहकों को नियंत्रित करने के लिए प्रणालीगत कीटनाशकों का छिड़काव करते रहें।

दैनिक जागरण 9/10/25 पेज 6

गन्ना बीज श्रोत का वैज्ञानिक ने किया निरीक्षण

संस, जागरण, हसनपुर : प्रखंड अंतर्गत्त मुख्यमंत्री गन्ना विकास कार्यक्रम 2025-26 के तहत डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक डा. बलवंत कुमार ने निरीक्षण किया। हसनपुर चीनी मिल के वरीय गन्ना प्रबंधक एमए खान के देख-रेख में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कृषि वैज्ञानिक ने सिंगल बड पौधे तैयार करने हेतु गन्ना बीज श्रोत खेतों का निरीक्षण किया। चीनी मिल परिक्षेत्र के अरैला, मालीपुर, कल्याणपुर, मंदा, मूसेपुर के अलावा मोरतर गांव पहुंचे। किसान मिथलेश कुमार राय व संजीव कुमार के पौधशाला के गन्ना प्रजाति सीओ-0118, सीओ-0238, सीओएलके-14201 आदि के बीज श्रोतों का निरीक्षण एवं प्रत्यक्षण किया। वैज्ञानिक ने मोरतर गांव के किसान मिथिलेश कुमार द्वारा तैयार किए जा रहे पौधशाला एवं बीज निरीक्षण के क्रम में उनके प्रयास की काफी सराहना की। मौके पर उप प्रबंधक प्रमोद मणि त्रिपाठी, गन्ना विकास अधिकारी अनिल कुमार कश्यप, सहायक निदेशक कार्यालय प्रतिनिधि सुधीर कुमार शाही आदि उपस्थित रहे।

गन्ना बीज स्त्रोत का निरीक्षण करते वैज्ञानिक • जागरण

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 12 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों मे आने वाले दिनों मे मौसम शुष्क बने रहने की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह में अधिकतम तापमान में गिरावट आ सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 30-32 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 24-25 डिग्री के आसपास रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
09 अक्टूबर	32.0	23.0
10 अक्टूबर	32.0	23.6
	दरभंगा	
09 अक्टूबर	32.0	23.6
10 अक्टूबर	32.3	23.6
	पटना	
09 अक्टूबर	31.7	24.5
10 अक्टूबर	31.8	24.9

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 9/10/25 पेज 4

बच्चों का भविष्य संवारने व आर्थिक समृद्धि का मूल मंत्र है महिला शिक्षा

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के डीन (स्नातकोत्तर) डॉ. मयंक राय ने कहा कि बदलते समय में महिलाओं को शिक्षित होना जरूरी है। महिला शिक्षा बच्चों के भविष्य संवारने के साथ आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाता है।

इसके लिए महिलाओं को शिक्षा व आत्मनिर्भरता के प्रति जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। वे भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन पूसा (आईएआरआई) में प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था अनुसूचित जाति उप परियोजना के तहत कृषि बागवानी फसल उत्पादन में आधुनिक दृष्टिकोण और हालिया विकास पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि ग्रामीण महिलाओं को भी मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन जैसे कार्यों को स्वरोजगार के रूप में अपनाकर व मूल्य संवर्धन कर उसे व्यवसायिक रूप देने की जरूरत है।

पूसा के आईएआरआई में पुस्तक का विमोचन करते डीन, अध्यक्ष व अन्य।

संस्थान के अध्यक्ष डॉ.प्रियरंजन कुमार ने कहा कि यह प्रशिक्षण स्वरोजगार के विकल्पों का मार्ग प्रशस्त करेगा। जरूरत है प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को जमीनी स्वरूप देने की। इस दौरान उन्होंने अरहर, गेहूं, पपीता, दलहन, तेलहन, फल,फूल एवं सब्जी बिषयों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने महिलाओं से पोषण वाटिका धर के निकट लगाने पर बल दिया। डॉ.तमोघना साहा ने सब्जी फसलों के उपचार को लेकर विस्तार चर्चा की। इस दौरान किसान पत्रिका का विमोचन किया गया। स्वागत डॉ. सतीश नायक एवं संचालन डॉ.मो हसनैन ने किया। मौके पर मुख्य तकनीकी पदाधिकारी मीरा पाण्डेय, मनीष कुमार भारती, अभिषेक कुमार, सुरेन्द्र कुमार राय, डेजी कुमारी आदि मौजूद थे।

शिवम सहायक प्रध्यापक पद पर चयनित

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के वरीय तकनीकी सहायक व दिघरा गांव निवासी अखिलेश कुमार एवं मंजु कुमारी के पुत्र शिवम गांधी हरियाणा लोक सभा आयोग के तहत सहायक प्राध्यापक के पद पर चयनित हुए है। उन्होंने 74.25 अंक हासिल 11वां रैंक हासिल किया है। मिली जानकारी के अनुसार इसमें कुल 118 छात्रो का चयन किया गया है। हिन्दुस्तान 3/10/25 पेज 4

प्रभात खबर 9/10/25 पेज 6

किसान रबी फसलों की बोआई को खेतों की करें तैयारी

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा किसानों के लिये समसामयिक सुझाव जारी किया गया है. कहा गया है कि किसान ऊंचास खेतों में अगात रबी फसलों की बोआई के लिए खेतों की तैयारी शुरु करें. गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे में अच्छी प्रकार बिखेड़ कर एवं जुताई कर मिला दें. यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्र बढ़ाती है. तोरी की आरएयूटीएस-17, पंचाली, पीटी-303 एवं भवानी किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है. खेत की अन्तिम जुताई के समय 30 किलोग्राम नत्रेजन, 40 किलोग्राम स्फुर, 40 किलोग्राम पोटास एवं 20 से 30 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें. जिंक की कमी वाले खेत में 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टयेर की दर से व्यवहार करें. शरदकालीन गन्ना, मसूर, मटर, राजमा, मेथी, लहसनु, धनियां, राई एवं सूर्यमुखी फसलों के समय से बोआई के लिए वर्षा उपरान्त खेतों की तैयारी शुरु करें. खेत से सटे मेड़ों, नालों व आसपास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलों की साफ-सफाई आवश्य करें. ताकि इन जंगलों में छुपे कीट व रोगों के कारक आदि सम्पूर्ण रुप से नष्ट हो जाये. गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टयेर की दर से पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेड़ कर एवं जुताई कर मिला दें. धान की फसल जो दुग्धावस्था में आ गयी हो उसमें गंधी कीट की निगरानी करें. इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों पौधों के बालियों का रस चूसना प्रारंभ कर देती है. इससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं. छिलका का रंग सफेद हो जाता है. धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुंचाती है. इससे उपज में काफी कमी होती है. इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबू निकलती है. जिस वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचानी जा सकता है. इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते हैं. इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल 10 प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर 10-15 किलोग्राम की दर से भुरकाव करें. फूलगोभी की फसल में पत्ती खाने वाली कीट की निगरानी करें. इस कीट के पिल्लू फूलगोभी की मध्यवाली पत्तियों तथा सिर वाले वाले भाग को अधिक क्षति पहुंचाती है. शुरुआती अवस्था में यह पिल्लू पत्तियों की निचली सतह में सुरंग बना कर एवं उसके अन्दर पत्तियों को खाता है. इस कीट से बचाव हेतु स्पनेस्डे 48 ईसी दवा एक मिली प्रति 4 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें. फूलगोभी की पिछात किस्मों जैसे माघी, स्नोकिंग, पूसा स्नोकिंग-1, पूसा-2, पूसा स्नोवॉल-16, पूसा स्नोवॉल के-1 की बोआई नर्सरी में करें. बैगन की फसल में तना एवं फल छदेक कीट की निगरानी करें. शुरुआती रोकथाम के लिए बैगन की रोपाई के 10 से 15 दिनों बाद एक ग्राम फ्यूराडान 3 जी दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिला दें. खड़ी फसल में इस कीट का आक्रमण होने पर कीट से ग्रसित तना एवं फल की तुराई कर मिट्टी में गाड़ दें. अगर कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड 48 ईसी प्रति 1 मिली प्रति 4 लीटर पानी या क्वीनालफॉस 25 ईसी दवा का 1.5 मिमी प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव आसमान साफ रहने करें. फूलगोभी की फसल में पत्ती खाने वाली कीट की निगरानी करें. इस कीट के पिल्लू फूलगोभी की मध्यवाली पत्तियों व सिर वाले भाग को अधिक क्षति पहुंचाती है. शुरुआती अवस्था में यह पिल्लू पत्तियों की निचली सतह में सुरंग बनाकर एवं उसके अन्दर पत्तियों को खाता है. इस कीट से बचाव हेतु स्पेनोसडे 48 ईसी दवा एक मिली प्रति 4 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें. फूलगोभी की पिछात किस्मों माघी, स्नोकिंग, पूसा स्नोकिंग 1, पूसा-2, पूसा स्नोवॉल 16, पूसा स्नोवॉल के 1की बोआई नर्सरी में करें.

कृषि बागवानी फसल उत्पादन में आधुनिक दृष्टिकोण और हालिया विकास विषय पर प्रशिक्षण शुरू

प्रभात खबर 9/10/25 पेज 2

महिलाएं व्यवसाय से जुड़कर बढ़ायें आय : डॉ राय

प्रतिनिधि, पूसा

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र के सभागार में अनुसूचित जाति उप परियोजना के अंतर्गत कृषि बागवानी फसल उत्पादन में आधुनिक **दृष्टिकोण** और हालिया विकास विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए संस्थान के अध्यक्ष डॉ प्रियरंजन कुमार ने कहा कि आईएआरआई बिहार के लिए ऐतिहासिक धरोहर है. यहां के किसानों को इसे सम्भाल कर रखने की जरूरत है. संस्थान में फल, सब्जी एवं फूल के खेती के अलावे धान, गेहूं, **दलहन**, तेलहन के उन्नतशील नवीनतम प्रभेदों का बीज तैयार कर किसानों के लिए उपलब्ध की जाती है. किसान इस तरह की फसलों का उत्पादन कर आर्थिक स्थिति मजबूत बना सकते हैं. खासकर ग्रामीण महिलाएं अपने घर पर ही पोषण वाटिका लगाकर आमदनी बढ़ा सकती है. बतौर मुख्य अतिथि डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय ने कहा कि ग्रामीण महिलाओं को कृषि बागवानी व्यवसाय से जुड़कर आमदनी बढ़ाने की जरूरत है. खासतौर से मशरूम उत्पादन, मधुमक्खीपालन के अलावा वैल्यू एडिशन को अपनाते हुए केले के रेशा से विभिन्न उत्पादों का निर्माण कर स्वरोजगार की दिशा में पहल कर सकती है. फल एवं सब्जी की खेती भी ग्रामीण महिलाओं के लिए बेहतर साबित हो सकता है. प्रशिक्षण का मुख्य आयोजक संस्थान के वैज्ञानिक डॉ तमोघना साहा ने पौधा में होने वाले रोग के बारे में विस्तार से बताया. प्रशिक्षण के सह आयोजक वैज्ञानिक सतीश नायक एवं डॉ मो हसनैन ने सुचारू रूप से संचालन करने का दायित्व को निर्वहन किया.

इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों के बीच एक स्प्रेयर मशीन के अलावा 5 किलोग्राम उन्नत प्रभेद का गेहूं की बीज, एक आम का पौधा, एक लीची का पौधा, पपीता का पांच पौधा इनपुट के रूप में वितरण किया गया. मौके पर मुख्य तकनीकी अधिकारी मीरा पांडेय, सहायक प्रशासनिक अधिकारी मनीष कुमार भारती, अभिषेक कुमार, अनिल कुमार, सुरेंद्र कुमार राय आदि मौजूद थे.

इनपुट देते डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय .

राजेश कुमार दास, संतोष कुमार उपस्थित थे.

प्रभात खबर
9/10/25 पेज 6

गन्ना बीज स्रोतों का किया निरीक्षण

हसनपुर . गन्ना विकास कार्यक्रम 2025-26 के अंतर्गत हसनपुर चीनी मिल के वरीय गन्ना प्रबंधक एमए खान की देखरेख में डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि वैज्ञानिक डॉ बलवंत कुमार ने सिंगल बड पौधे तैयार करने के लिए गन्ना बीज स्रोत खेतों का निरीक्षण किया. उन्होंने ग्राम अरैला, मालीपुर, कल्याणपुर, मंदा, मूसेपुर, मोरतर में मिथलेश कुमार राय एवं कोरई ग्राम के संजीव कुमार के पौधशाला के गन्ना प्रजाति सीओ 0118, सीओ 0238, सिओएल्के 14201 के बीज श्रोतों का निरीक्षण एवं प्रत्यक्षण किया. इस क्रम में वैज्ञानिकों ने मोरतर ग्राम के किसान मिथलेश कुमार के द्वारा तैयार किये जा रहे पौधशाला एवं बीज की सराहना की. मौके पर उप प्रबंधक गन्ना प्रमोद मणि त्रिपाठी, गन्ना विकास अधिकारी अनिल कुमार कश्यप, सहायक निदेशक कार्यालय प्रतिनिधी सुधीर कुमार शाही, किसान सह कोरई ग्राम पौधशाला संचालक संजीव कुमार, मिथलेश कुमार आदि मौजूद थे.

मा० भास्कर 11/10/25 पेज 13

पूर्वानुमान • इस अवधि में औसतन 5 से 7 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना

उत्तर बिहार में 15 अक्टूबर तक आसमान साफ व मौसम शुष्क रहेगा, 32-34 डिग्री के बीच रह सकता है तापमान

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ़ तथा मौसम क शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधी में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 22-25 डिग्री सेल्सियस बने रहने की सम्भावना है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90-95 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 45-50 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस बीच पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 7 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान भाई शरदकालीन गन्ना, मसूर, मटर, राजमा, मेथी, लहसुन, धनियाँ, राई एवं सुर्यमुखी फसलों के समय से बुआई के लिए खेतों की तैयारी करें। खेत से सटे मेड़ों, नालों एवं आस-पास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलों की साफ-सफाई अवश्य करे। ताकि इन जंगलों में छिपे कीट व रोगों के कारक आदी सम्पर्ण रुप से नष्ट हो जाए। गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेरकर एवं जुताई कर मिला दें। यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है। खेतों में अंकुरण के लायक नमी बनाये रखने के लिए खाली खेतों को तैयार करें।

आसमान आते-जाते रहे बादल।

गन्ना, मसूर, मटर, राजमा के लिए तैयार करें खेत

शरदकालीन गन्ना, मसूर, मटर, राजमा, मेथी, लहसुन, धनियां, राई एवं सूर्यमुखी फसलों के समय से बुआई के लिए खेतों की तैयारी करें। खेत से सटे मेड़ों, नालों एवं आस-पास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलों की साफ-सफाई अवष्य करें। ताकि इन जंगलों में छिपे कीट व रोगों के कारक आदी सम्पूर्ण रुप से नष्ट हो जाए। गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर एवं जुताई कर मिला दें। यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढाती है। खेतों में अंकुरण के लायक नमी बनाये रखने के लिए खाली खेतों की प्रत्येक जुताई के बाद पाटा अवश्य चला दें। ऊंचांस खेतों में तोरी की बुआई शुरु करें। तोरी की आरएयुटीएस-17, पंचाली, पीटी-303 एवं भवानी किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है। खेत की अन्तिम जुताई के समय 30 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम स्फुर, 40 किलोग्राम पोटास एवं 20 से 30 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। जिंक की कमी वाले खेत में 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें।

भास्कर 11/10/25 पेज 16

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी सलाह

पपीते के फल में लगने वाला कुबड़ापन रोग किसानों के लिए बड़ी समस्या, वैज्ञानिक तकनीक से ही रोग का होगा समाधान

भास्कर न्यूज़ | पूसा

पपीते के फल में लगने वाला कुबड़ापन बीमारी पपीता उत्पादक किसानों के लिए एक बड़ी समस्या हैं। इस बीमारी के संक्रमण से पपीता का फल बुरी तरह से विकृत हो जाता है जिस वजह से पपीते के फल की कीमत बाजारों में अच्छी नहीं मिल पाती हैं। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह मुख्य कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि पपीते के फल में लगने वाला कुबड़ापन बीमारी खासकर बोरॉन की कमी से होता हैं। उन्होंने बताया कि पपीते में बोरॉन की कमी के कारण उत्पन्न होने वाले शुरुआती लक्षणों पर गौर करें तो पपीते की पत्तियों का रंग पीला पड़ने लगता है। तथा पत्तियां नीचे की ओर मुड़ने भी लगती हैं। इसके अलावे इस बीमारी के संक्रमण से एक सफेद तरह का स्राव (लेटेक्स) पपीते के मुख्य तने के ऊपरी हिस्से, पत्ती के डंठल, पपीते के मुख्य नसों और डंठल (पेटीओल्स)के नीचे से दरार बनकर बहने लगता है।

कुबड़ापन बीमारी से ग्रसित पपीते का फल।

पौधों में बोरॉन की कमी से फूलों का गिरना तेज

उन्होंने बताया कि इस प्रक्रिया के बाद आखिरकार पौधें मृत्यु के कगार पर पहुंच जाते हैं। उन्होंने बताया कि किसी भी फलदार पौधों में बोरॉन की कमी का सबसे पहला संकेत पौधों से फूलों का गिरना होता है। इसके बाद जब फल विकसित होते हैं तो फल से एक सफेद तरह का लेटेक्स (स्राव) निकलने लगता है जिससे फल विकृत और ढेलेदार हो जाते हैं।

किसान कुबड़ापन रोग को ऐसे करें प्रबंधित, नुकसान कम

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान सर्वप्रथम बागान या खेतों के मिट्टी का परीक्षण कराकर उसमें बोरॉन की मात्रा का निर्धारण करें। यदि किसानों के लिए परीक्षण करा पाना संभव नहीं है तो किसान पपीते के प्रत्येक पौधें में 8 से 10 ग्राम बोरॉन का बेसल डोज मिट्टी में मिला दे। यह कार्य किसान मिट्टी की जुताई गुड़ाई कराते समय ही करें। इसके अलावे पपीते के फल में अगर कुबड़ापन बीमारी का लक्षण दिखाई दे तो किसान 6 ग्राम बोरॉन प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर एक-एक महीने के अंतराल पर पहले महीने से 8वें महीने तक पपीते के पौधें और फलों पर छिड़काव करते रहें। इस तरह से किसान पपीते के पौधों और फलों पर छिड़काव कर कुबड़ापन बीमारी को खत्म कर सकते हैं।

भास्कर 11/10/25 पे. 14

अधिष्ठाता के नेतृत्व में छात्र, कर्मियों ने कॉलेज परिसर में की साफ-सफाई

पूसा विवि के आधार विज्ञान एवं मानवीकी महाविद्यालय में चला अभियान

भास्कर न्यूज | पूसा

महाविद्यालय में साफ करते छात्र व कर्मी।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के आधार विज्ञान एवं मानवीकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरेश चंद्र की अध्यक्षता में शुक्रवार को महाविद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसमें महाविद्यालय से जुड़े वैज्ञानिकों, शिक्षकों, कर्मी और छात्र छात्राओं ने महाविद्यालय भवन के सभी कमरे और पूरे परिसर की साफ सफाई की। इस अवसर पर डॉ. चंद्रा ने कहा कि स्वच्छता अभियान का चलाया जाना बेहतर जन स्वास्थ्य, बीमारियों में कमी, स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाने के साथ-साथ देश की वैश्विक छवि को सुधारने के लिए बहुत ही जरूरी है। इस अभियान से अपशिष्ट प्रबंधन और सामुदायिक भागीदारी को भी बढ़ावा मिलता है। उन्होंने कहा कि यह अभियान सार्वजनिक और व्यक्तिगत स्वच्छता की आदतों में बदलाव लाकर देश को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने का एक सामूहिक प्रयास है। मौके पर अभियान के को ऑर्डिनेटर डॉ.महेश कुमार, वैज्ञानिक डॉ.शैलेश कुमार, डॉ.सुधीर पासवान आदि मौजूद थे।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 15 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह अधिकतम तापमान में गिरावट आने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 32–34 डिग्री और न्यूनतम तापमान 22–25 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
11 अक्टूबर	32.4	21.6
12 अक्टूबर	32.4	22.0
	दरभंगा	
11 अक्टूबर	32.4	22.0
12 अक्टूबर	33.0	22.0
	पटना	
11 अक्टूबर	34.7	23.5
12 अक्टूबर	34.7	23.5

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 11/4/25 पेज 4

कृषि विवि में हुई साफ-सफाई

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा के आधार विज्ञान एवं मानवीकी महाविद्यालय के छात्रों, कर्मियों व वैज्ञानिकों ने गुरूवार को स्वच्छता अभियान चलाया। इस दौरान डीन डॉ. अमरेश चन्द्रा के मार्गदर्शन में मौजूद लोगों ने महाविद्यालय के अलावा केन्द्रीय विद्यालय के निकट साफ-सफाई की। मौके पर अभियान के समन्वयक डॉ. महेश कुमार, डॉ. शैलेश कुमार, डॉ. सुधीर पासवान आदि मौजूद थे। इधर ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा में आयोजित स्वच्छता अभियान में निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह के मार्गदर्शन में वैज्ञानिकों, कर्मियों ने साफ-सफाई की। मौके पर डॉ. सीके झा, डॉ. बलवंत कुमार, डॉ. मिनातुल्ला, डॉ. नवनीत, डॉ. एसएन सिंह, डॉ. ललिता राणा समेत अन्य मौजूद थे।

हिन्दुस्तान 11/10/25 पेज 8

समिति की बैठक सह कार्यशाला आयोजित

विस चुनाव

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक सह कार्यशाला गुरुवार की शाम ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा के सभागार में हुई। इसमें विवि के विभिन्न इकाईओं के राजभाषा प्रभारियों ने हिस्सा लिया।

शुक्रवार को ईख अनुसंधान संस्थान के निकट बैठक में शामिल अधिकारी।

अध्यक्षता निदेशक शिक्षा डॉ. उमाकांत बेहरा ने किया। इस दौरान राजभाषा पदाधिकारी डॉ. शंकर झा ने राजभाषा नियमों के विभिन्न पहलुओं व राजभाषा की प्रगति प्रतिवेदन पर विस्तार से चर्चा की। मौके पर डॉ. शंकर झा ने राजभाषा नियम 3.3 एवं 5.5 की धाराओं का शत प्रतिशत पालन करने एवं प्रत्येक तिमाही में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने पर बल दिया। धन्यवाद डॉ. जया सिन्हा ने दिया। मौके पर डॉ. सुमित कुमार सिंह, डॉ. मीरा कुमारी, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. हेमचंद्र चौधरी, डॉ. भीके गोंड, डॉ. डीएन. कामत व अन्य मौजूद थे।

प्रभात खबर 11/10/25 पेज 4

बच्चों के विकास में माता-पिता की सहभागिता जरूरी

कार्यक्रम

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के तत्वावधान में बच्चों के संपूर्ण विकास में माता-पिता के सहभागिता विषय पर विवि से बाहर सरकारी एवं गैर सरकारी स्कूलों में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है.

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आरती सिन्हा ने कहा कि विवि परियोजना के तहत महमदपुर देवपार पंचायत के प्राथमिक विद्यालय, कृष्ण कुंज पब्लिक स्कूल एवं मध्य विद्यालय टीचर्स कॉलोनी में सीसीएस के छात्र-छात्राओं के साथ स्कूली बच्चों एवं अभिभावकों के साथ विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गयी. इस दौरान वरीय वैज्ञानिक डॉ सिन्हा ने कहा कि बच्चों के संपूर्ण विकास में माता-पिता की सहभागिता बहुत जरूरी होती है. इससे बच्चों में मानसिक शारीरिक एवं बौद्धिक विकास संभव हो पाता है. इस कार्यक्रम को विवि के कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय के निर्देशानुसार विवि परिसर से बाहर के बच्चों के लिए आयोजित किया गया है. इस जागरूकता अभियान में भिन्न-भिन्न पोस्टर लगाकर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रेरित किया गया. इस कार्यक्रम में अभिभावकों के लिए भी पासवॉल प्रतियोगिता आयोजित की गयी. इसमें से सफल प्रतिभागी को पुरस्कृत किया गया. स्वागत निदेशक आलोक रंजन ने किया. मौके पर राजेश कर्ण, आशीष गौरव, राम बिनोद सिंह, शिखा कुमारी, निधि, सोनाक्षी, कांति, रणवीर, रचित, तरुण, प्रिंस, कृष्णा, देव, अनुष्का, सृष्टि, जागृति, श्रावणी एवं अंश मौजूद थे.

कार्यक्रम में वैज्ञानिक के साथ मौजूद छात्रा.

प्रभात 11/10/25

कैंपस अलर्ट

खबर पेज 6

बेसिक साइंस विभाग में चलाया गया स्वच्छता अभियान

अभियान से जुड़े वैज्ञानिक.

पूसा . डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित आधार विज्ञान एवं मानवीकी महाविद्यालय के प्रांगण में शुक्रवार को स्वच्छता अभियान 5.0 के तहत महाविद्यालय के चारों तरफ महाविद्यालय के अंदर कमरे में व केंद्रीय विद्यालय पूसा के सामने साफ-सुथरा किया गया. इसकी अध्यक्षता महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ अमरेश चंद्रा ने की. समन्वयक डॉ महेश कुमार, डॉ शैलेश कुमार, डॉ सुधीर पासवान व वैज्ञानिकों व छात्र-छात्रा साफ सफाई अभियान का हिस्सा बने. धन्यवाद ज्ञापन डॉ महेश कुमार ने दिया.

भास्कर 12/10/25 पेज 18

कृषि • मटर की अगेती किस्म जवाहर मटर 3, जवाहर मटर 4 व हरभजन लगाएं

अक्टूबर माह के मध्य से नवंबर के पहले सप्ताह तक किसान अपने खेतों में करें मटर की बुआई

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के किसान अक्टूबर माह के मध्य से नवंबर के पहले सप्ताह तक अपने खेतों में वैज्ञानिक तकनीक से मटर की बुआई कर उच्च स्तरीय उत्पादन और अच्छा मुनाफा दोनों कमा सकते हैं। मटर की अगेती किस्म जैसे जवाहर मटर 3, जवाहर मटर 4, हरभजन, गोल्डेन आदि की खेती किसानों के लिए अत्यंत ही लाभकारी हैं। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी ने दी। उन्होंने कहा कि दलहनी सब्जियों में मटर का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। मटर जहाँ सब्जी व दाल दोनों रूप में किसानों को फायदा पहुंचाती है। वहीं मटर में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाकर भूमि को और अधिक उपजाऊ बनाती हैं। उन्होंने कहा कि आज के दौर में हरे मटर के दाने को सालों भर संरक्षित कर उसे आसानी से बेचा जा रहा है। बिहार के ज्यादातर किसान हरे मटर की तुड़ाई दो तीन राउंड करके तथा उसे बाजार में बेचने के बाद मटर के फसल को सूखाकर मटर दाल भी तैयार कर ले रहे हैं जिससे यह किसानों के लिए दोनों रूप में लाभकारी हैं।

खेतों में लगी मटर की फसल।

मटर की खेती के लिए जलवायु व मटर की किस्में

डॉ. तिवारी ने बताया कि मटर की खेती के लिए नम और ठंडी जलवायु को काफी उपयुक्त माना जाता है। बिहार के किसान जवाहर मटर 3, जवाहर मटर 4, हरभजन, पंत मटर आदि किस्मों की खेती कर उच्च स्तरीय उत्पादन और मुनाफा दोनों प्राप्त कर सकते हैं। केवीके हेड ने बताया कि किसान मटर की बुआई करने से पूर्व खेतों की जुताई काफी अच्छे ढंग से करें। खेत की मिट्टी जांच कराएं तथा उसके बाद एक हेक्टेयर खेत में पर्याप्त मात्रा में खूब सड़ी हुई गोबर की खाद, 25 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 से 70 किलोग्राम फास्फोरस और 50 किलोग्राम पोटाश के साथ-साथ मिट्टी में फ्यूराडॉन जरूर मिलाएं। किसान इसके बाद तैयार खेत में रस्सी के सहारे लाइन बाई लाइन पर मटर की बुआई करें। इससे किसानों को अधिक उपज होगी।

भास्कर 12/10/24 पेज 16

किसानों को तकनीकी जानकारी भी दी जाएगी

गांव में पहुंचेगा 'ज्ञान वाहन' किसानों को मिलेगा प्रशिक्षण

ज्ञान वाहन रथ के साथ किसान।

समस्तीपुर | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा और समथू फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, समस्तीपुर के तत्वावधान में आगामी 14 और 15 अक्टूबर को समथू, भगवानपुर देसुआ, मोरदिवा, पतैली हाट, चैता और हरपुर रेवाड़ी , विशनपुर समथू गाँवों में \'ज्ञान वाहन\' का आगमन होने जा रहा है।यह \'ज्ञान वाहन\' डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की एक अनूठी पहल है, जो किसानों को उनके द्वार पर खेती से जुड़ी नवीनतम जानकारी और वैज्ञानिक समाधान उपलब्ध कराने का कार्य करेगा।इसके माध्यम से किसानों को मिट्टी परीक्षण हेतु सैंपल संग्रह,सफल किसानों की प्रेरणादायक कहानियां, कृषि से जुड़ी सरकारी योजनाओं की जानकारी मिलेगी।

दैनिक जागरण 12/10/25 पेज 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 15 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलो में आने वाले दिनों मे आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सतार ने बताया कि इस सप्ताह अधिकतम तापमान मे गिरावट आने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री और न्यूनतम तापमान 22-25 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
12 अक्टूबर	32.4	21.6
13 अक्टूबर	32.4	22.0
दरभंगा		
12 अक्टूबर	32.4	22.0
13 अक्टूबर	33.0	22.0
पटना		
12 अक्टूबर	34.7	23.5
13 अक्टूबर	34.7	23.5

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 12/10/25 पेज 4

पौष्टिक आहार महिलाओं की आजीविका व आत्मनिर्भरता के लिए महत्वपूर्ण : डॉ सतपथी

प्रतिनिधि, पूसा

भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत संचालित न्यूट्री स्मार्ट विलेज कार्यक्रम के तहत कृषि ज्ञान वाहन गंगापुर गांव पहुंचा. इस अवसर पर महिला किसानों के लिए प्रशिक्षण सह बीज वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. एआईसीआरपी ऑन वूमन इन एग्रीकल्चर परियोजना से जुड़ी हुई है.

अध्यक्षता करते हुए वैज्ञानिक सह नोडल अधिकारी डॉ. बिनीता सतपथी ने महिला किसानों को न्यूट्री **स्मार्ट विलेज की** अवधारणा व पोषण वाटिका की महत्ता के बारे में विस्तार से जानकारी दी. उन्होंने बताया कि पोषण वाटिका के माध्यम से परिवारों को **न केवल पौष्टिक आहार प्राप्त होता है, बल्कि यह आजीविका सशक्तिकरण और** आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण

ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाते वैज्ञानिक.

कदम है. कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वैज्ञानिक ई. विनिता कश्यप ने भी किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पोषण-संवेदनशील कृषि प्रणाली ग्रामीण परिवारों में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रभावी माध्यम है. इस अवसर पर वाहन के माध्यम से किसानों के बीच तकनीकी वीडियो फिल्मों का प्रदर्शन किया गया. जिसमें पोषण आधारित खेती, सब्जी उत्पादन, बीज संरक्षण, बाजार से जुड़ाव की आधुनिक तकनीक प्रदर्शित की गयी. किसानों ने वाहन में स्थापित डिजिटल उपकरणों और ऑडियो-विजुअल माध्यमों के जरिये कृषि से जुड़ी नई जानकारी प्राप्त की.

भास्कर 13/10/25 पेज 17

मंडे पॉजिटिव

मुरली मनोहर सिंह युवाओं को खेती के लिए कर रहे प्रेरित, गांव में रोजगार बढ़ रहा

पपीता की खेती से बदली तकदीर, पारंपरिक खेती को छोड़ अपनाई नकदी फसल, दस लाख तक आमदनी

भास्कर न्यूज | समस्तीपुर

परिश्रम, नवाचार और आत्मविश्वास के बल पर कोई भी युवा अपनी तकदीर बदल सकता है। इसका जीवंत उदाहरण हैं उजियारपुर प्रखंड के गावपुर पंचायत निवासी परमानंद सिंह के सुपुत्र मुरली मनोहर सिंह, जो आज पपीता उत्पादन के क्षेत्र में एक स्थापित नाम बन चुके हैं। मात्र 21 वर्ष की उम्र में वर्ष 2015 से पपीते की खेती शुरू करने वाले मुरली मनोहर अब न सिर्फ खुद लाखों की कमाई कर रहे हैं, बल्कि दर्जनों युवाओं को भी इससे जोड़कर उनकी जिंदगी में बदलाव ला चुके हैं।मुरली मनोहर सिंह ने शुरुआत महज दो कट्ठे जमीन पर पपीते की खेती से की थी। अपने अनुभव और मेहनत के बल पर आज वे एक एकड़ भूमि में खेती कर प्रति फसल दस लाख रुपए तक की आमदनी कर रहे हैं। उनका मानना है कि पारंपरिक खेती की तुलना में नगदी फसलें, विशेष रूप से पपीता, किसानों के लिए अधिक लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।वे ताइवानी किस्म एफ वन 786 रेड लेडी के पौधों को अपनी ही नर्सरी में तैयार करते हैं और खेतों में लगाते हैं। आमतौर पर फरवरी महीने में पौधारोपण कर दिया जाता है और सितंबर से फल निकलना शुरू हो जाता है। हर पौधा पूरे फसल चक्र के दौरान लगभग एक क्विंटल तक फल देता है। प्रति कट्ठा लगभग 70 हजार रुपये की आय होती है।

खेत में लगी पपीता की फसल।

युवाओं को दिया प्रशिक्षण, बदला तरीका

मुरली मनोहर सिंह अब तक दर्जनों युवाओं को पपीते की खेती का प्रशिक्षण दे चुके हैं। उनके प्रेरणा से पतैली, बेलारी, सातनपुर सहित कई गांवों के किसान अब पारंपरिक खेती छोड़कर पपीता और अन्य नकदी फसलों की ओर अग्रसर हो रहे हैं। उनका सपना है कि हर किसान कम-से-कम दस कट्ठे में पपीते की खेती करे, ताकि गांव की आर्थिक स्थिति सुधर सके।मुरली मनोहर का कहना है कि पपीता एक ऐसी फसल है जिसकी मांग पूरे वर्ष बनी रहती है। डॉक्टरों द्वारा पपीता खाने की सलाह दिए जाने से इसकी बाजार मांग स्थिर रहती है।

नवरात्र में 20 क्विंटल पपीता की हुई बिक्री

नवरात्र के दौरान मुरली मनोहर ने कलश स्थापना से अष्टमी तक गांव के व्यापारियों को लगभग 20 क्विंटल पका हुआ पपीता बेचा है। अब वे इसके उत्पादन को और भी बड़े पैमाने पर करने की योजना बना रहे हैं।मुरली मनोहर सिंह की यह सफलता उन तमाम युवाओं के लिए प्रेरणा है जो खेती को घाटे का सौदा समझते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 15 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह अधिकतम तापमान में गिरावट आने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 32–34 डिग्री और न्यूनतम तापमान 22–25 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
13 अक्टूबर	32.4	21.6
14 अक्टूबर	32.4	22.0
	दरभंगा	
13 अक्टूबर	32.4	22.0
14 अक्टूबर	33.0	22.0
	पटना	
13 अक्टूबर	34.7	23.5
14 अक्टूबर	34.7	23.5

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 13/10/25 पेज 4

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि परिसर स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च

किंग ओएस्टर व इनोकी मशरूम बढ़ाता लोगों की रोग प्रतिरोधी क्षमता : डॉ दयाराम

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के फार्म में किंग ओएस्टर एवं इनोकी मशरूम के बेहतर उत्पादन को लेकर किसानों के बीच प्रत्यक्षण हुई. इस दौरान सेवानिवृत वैज्ञानिक सह मशरूम विशेषज्ञ डॉ दयाराम ने बताया कि शीत (विन्टर मशरूम) मशरूम या इनोकी मशरूम भी एक औषधीय मशरूम है जो लीवर, पेट एवं आंत के अल्सर से बचाव एवं नियंत्रण करता है. **इसके अलावा** प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाता है. ट्यूमर, कैंसर आदि घातक बीमारी से बचाव करता है. पौष्टिक दृष्टिकोण से यह

फार्म में लगे किंग ओएस्टर मशरूम.

महत्वपूर्ण स्थान रखता है. इसमें विटामिन बीडी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है. इसके अलावा इस मशरूम में पोटैशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, आयरन जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं. इनोकी मशरूम फ्लेवोनोइड्स, फिलानिक यौगिकों और पॉलीसेकेराइड सहित एंटीऑक्सिडेंट से भरे होते हैं. इसमें 2.7 प्रतिशत प्रोटिन, 5-8 प्रतिशत वसा, 8-9 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 2-3 प्रतिशत फाइबर, प्रचुर मात्रा में पोटैशियम, आयरन आदि पोष्टिक तत्व पाये जाते हैं. इसमें कैलोरी ऊर्जा पाया जाता है. किंग ओयस्टर मशरूम मशरूम के प्रयोग से पेट में हुकवर्म या अन्य कीड़े की समस्या समाप्त हो जाती है. इसके अलावा इस मशरूम में ट्यूमर, कीटाणु एवं जीवाणु नियंत्रण करने के गुण पाये जाते है. इसके अलावा यह एन्टी ऑक्सीडेन्ट गुण से भरपुर है जो ब्लड सुगर व ब्लड प्रेशर में फायदा करता है. प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है. इरगोथायोमीन तत्व विभिन्न तरह का लाभ पहुंचाता है. इस मशरूम की खेती अन्य ओयस्टर की प्रजातियों की भांति की जाती है. सिर्फ अन्तर इतना है कि इसे एक निश्चित तापक्र[illegible]-22 डिग्री सेल्सियस पर [illegible]है. अक्टूबर से मार्च तक कुल 4 फसल लिया जा सकता है. इस मशरूम की खेती लकड़ी के बुरादों पर किया जाता है. परन्तु बिहार में इसकी खेती गेहूं के भूसा तथा मक्के के काव स्टोन (नेढ़ा) पर भी अच्छी उपज प्राप्त होता है. बिहार में इस मशरूम का उत्पादन 3.5 टन वार्षिक है. इसे बतौर सब्जी या अन्य व्यंजन के रूप में प्रयोग करना भी लाभकारी होता है. वहीं केंद्र प्रभारी सह मशरूम वैज्ञानिक डॉ आरपी प्रसाद ने बताया कि अधिक उत्पादन होने पर इसे सुखा कर वायुरहित पैक करके सालभर रखें. समय-समय पर इसका उपयोग पाउडर या जल में मिलाकर इस मशरूम की खेती नवम्बर से मार्च तक वटन मशरूम के विकल्प के तौर पर किया जा सकता है.

प्रभात खबर 13/10/25 पेज 7

किसान गन्ना, मसूर, मटर के लिए खेत तैयार करें

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा किसानों के लिये समसमायिक सुझाव जारी किया गया है. कहा गया है कि शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुये किसान शरदकालीन गन्ना, मसूर, मटर, राजमा, मेथी, लहसुन, धनियां, राई तथा सर्युमुखी फसलों के समय से बोआई के लिए खेतों की तैयारी करें. खेत से सटे मेड़ों, नालों एवं आसमास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलों की साफ-सफाई अवश्य करें, ताकि इन जंगलों में छिपे कीट व रोगों के कारक आदि सम्पूर्ण रुप से नष्ट हो जाये. गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेड़कर एवं जुताई कर मिला दें. यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्र बढाती है. खेतों में अंकुरण के लायक नमी बनाये रखने के लिए खाली खेतों की प्रत्येक जुताई के बाद पाटा आवश्य चला दें. उचॉस खेतों में तोरी की बुआई शुरु करें. तोरी की आरएयूटीएस-17, पंचाली, पीटी-303 एवं भवानी किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है. खेत की अन्तिम जुताई के समय 30 किलोग्राम नत्रेजन, 40 किलोग्राम स्फुर, 40 किलोग्राम पोटास तथा 20 से 30 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें.

जिंक की कमी वाले खेत में 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टयेर की दर से व्यवहार करें. शरदकालीन गन्ना, मसूर, मटर, राजमा, मेथी, लहसुन, धनियां, राई एवं सुर्यमुखी फसलों के समय से बोआई के लिए खेतों की तैयारी करें. खेत से सटे मेड़ों, नालों एवं आसपास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलों की साफ-सफाई आवश्य करें, ताकि इन जंगलों में छिपे कीट व रोगों के कारक आदि सम्पूर्ण रुप से नष्ट हो जाए. गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेड़कर एवं जुताई कर मिला दें. यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्र बढ़ाती है. खेतों में अंकुरण के लायक नमी बनाये रखने के लिए खाली खेतों की प्रत्येक जुताई के बाद पाटा आवश्य चला दें. बालियां निकलने तथा दूध भरने की अवस्था वाली पिछात धान की फसल में गंधी बग कीट की निगरानी करें. धान की इस अवस्था में यह कीट पौधों को अधिक क्षति पहुंचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है.

इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दुग्धावस्था वाली धान की फसल में बालियों का रस चूसना प्रारंभ कर देती हैं, जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है. इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है. इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते हैं. इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल 10 प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर 10-15 किलोग्राम की दर से भूरकाव 8 बजे सुबह से पहले अथवा 5 बजे शाम के बाद बालियों पर करें. खतों के आसपास के मेड़ों पर दवा का भूरकाव आवश्य करें. सितम्बर में बोयी गई अरहर की फसल में निकाई-गुड़ाई करें. जून-जुलाई में बोयी गई अरहर में कीट-व्याधि का निरीक्षण करें.

पत्तागोभी की अगात किस्मों की बोआई नर्सरी में करें. इसके लिए प्राइड ऑफ इण्डिया, गोल्डेन एकर, पूसा मुक्ता, पूसा अगेती एवं अर्ली ड्रम हेड किस्में अनुशंसित है. अगात मूली की बोआई करें. इसके लिए पूसा चेतकी, पूसा देसी, पूसा हिमानी, जौनपुरी जापानी सफेद, पूसा रश्मि, जापानी सफेद, पंजाब सफेद, अर्का निशांत आदि प्रभेद अनुशंसित है. बीजदर 4 से 5 किग्रा प्रति हेक्टेयर तथा 25 गुणा10 सेमी की दूरी पर बोआई करें. किसान बैंगन की तैयार पौध की रोपाई करें. रोपनी से पहले एक ग्राम फ्युराडान 3 जी दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिलाकर रोपनी करें. 20 से 25 दिनों वाली फसल में निकौनी करें.

प्रभात 13/10/25

खबर पेज 4

कैंपस अलर्ट

राजेंद्र शिशु सदन के सत्यम ने जीता कांस्य पदक

मेडल प्राप्त करते सत्यम.

पूसा. जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता के अंतर्गत बैडमिंटन प्रतियोगिता में डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित राजेन्द्र शिशु सदन विद्यालय पुसा के कक्षा आठ के सत्यम कुमार ने कांस्य पदक जीतकर विद्यालय का नाम रौशन किया है. इस मौके पर विद्यालय की प्राचार्या पुष्पा कुमारी ने बधाई देते हुए कहा कि इस विद्यालय के बच्चों ने पहली बार इस तरह की प्रतियोगिता में भाग लेकर अपनी प्रतिभा दिखाया है. साथ ही कांस्य पदक भी जीता है. यह बहुत ही हर्ष और गर्व की बात है.

मौसम • पूर्वानुमान की अवधि में औसतन 3 से 5 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चल सकती है

उत्तर बिहार में 19 अक्टूबर तक आसमान साफ व मौसम के शुष्क रहने की है संभावना, तापमान में आएगी कमी

भास्कर सिटीरिपोर्टर | समस्तीपुर 15/10/25 पेज 17

उत्तर बिहार के जिलों में 19 अक्टूबर तक आसमान प्रायः साफ तथा मौसम क शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 31-33 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 19-21 डिग्री सेल्सियस बने रहने की सम्भावना है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80-85 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 45-55 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस बीच पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3 से 5 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान अगात मक्का की तैयार फसलों की कटाई करें। रबी फसल के लिए खेत की तैयारी करें। फसलों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेरकर मिला दें। खड़ी फसलों में कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें। 20 अक्टूबर के बाद शरदकालीन गन्ना की रोपाई की जा सकती है। शरदकालीन गन्ना, मसर, मटर, राजमा, मेथी, लहसुन, धनियां, राई एवं सूर्यमुखी फसलों के समय से बुआई के लिए खेतों की तैयारी करें। खेत से सटे मेड़ों, नालों एवं आस-पास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलों की साफ-सफाई अवश्य करे। ताकि इन जंगलों में छिपे कीट व रोगों के कारक आदि सम्पूर्ण रुप से नष्ट हो जाए। गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पुरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेरकर एवं जुताई कर मिला दें। यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्यों की मात्रा बढ़ाती है। खेतों में अंकुरण के लायक नमी बनाये रखने के लिए खाली खेतों की प्रत्येक जताई के बाद पाटा अवश्य चला दें।

खेत में धान की फसल

आलू, मक्का, चना व राजमा के लिए तैयार करें खेत

आलू, मक्का, चना, मटर, राजमा, मेथी एवं लहसुन फसलों के समय से बुआई के लिए खेतों की तैयारी करें। गोबर की सठी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेरकर एवं जुताई कर मिला दें। खेतों में अंकुरण के लायक नमी बनाये रखने के लिए खाली खेतों की प्रत्येक जुताई के बाद पाटा अवश्य चला दें। बालियां निकलने तथा दुध भरने की अवस्था वाली पिछात धान की फसल में गंधी बग कीट की निगरानी करें। धान की इस अवस्था में यह कीट पौधों को अधिक क्षति पहुंचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दुग्धावस्था वाली धान की फसल में बालियों का रस घुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबू निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है। इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल 10 प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर 10-15 किलोग्राम की दर से भूरकाव 4 बजे सुबह से पहले अथवा 5 बजे शाम के बाद बालियों पर करें।

Dainik Bhaskar 15-10-2025

भास्कर 15/10/25 पेज 20

धान की फसल में ब्लास्ट रोग का प्रकोप बढ़ा, उत्पादन पर पड़ेगा असर : तिवारी

केवीके हेड ने मौजूदा समय में धान की फसल में लगने वाले रोग की दी जानकारी

भास्कर न्यूज | पूसा

धान के फसल की तैयारी का अंतिम चरण चल रहा है। इस समय धान के फसल में विभिन्न तरह के कीट-व्याधि व बीमारियों के लगने की संभावना रहती है। इन कीट बीमारियों के प्रकोप से धान की पैदावार में कमी आ सकती है तथा किसानों को नुकसान उठाना पड़ सकता हैं। धान उत्पादक किसान खासकर इस समय अपने अपने धान के फसल की निगरानी करते रहे और कीट व्याधि नजर आते ही उसका तत्काल वैज्ञानिक प्रबंधन शुरू करें। ये जानकारी केवीके हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी ने

दी है। उन्होंने कहा कि धान से गुणवत्तापूर्ण फसल तथा अधिक पैदावार लेने के लिए विभिन्न तरह के कीटों और बीमारियों से धान की फसल को बचाना अत्यंत ही आवश्यक हैं। कृषि वैज्ञानिक ने कहा कि दाना बनने के समय धान में गंधीबग कीट का प्रकोप ज्यादा देखने को मिलता हैं। इस कीट के संक्रमण से धान की बाली सूखने लगती हैं जिससे उपज में कमी आती हैं। इस कीट से फसल को बचाने के लिए किसान क्यूनालफॉस या मेलाथियान पाउडर का 25 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से धान की फसल पर भुरकाव करें। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि धान में लगने वाला ब्लास्ट रोग भी काफी खतरनाक होता हैं। अगर धान की फसल में ब्लास्ट रोग का प्रकोप दिखाई दें तो किसान टेबुकोनाजोल 25 प्रतिशत दवाई कि 750 ग्राम मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से पानी में घोलकर धान की फसल पर छिड़काव करें।

कृषि छात्र व वैज्ञानिकों ने साफ-सफाई कर दिया स्वचछता का संदेश

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, पूसा में मंगलवार को विशेष स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। जिसमें डीन डॉ. राम सुरेश के मार्गदर्शन में वैज्ञानिकों, शिक्षकों, कर्मचारियों व छात्र छात्राओं ने महाविद्यालय के आसपास क्षेत्रों में साफ सफाई की। स्वच्छता अभियान का आयोजन एनएसएस अधिकारी डॉ. दिनेश रजक ने किया। मौके पर विभागाध्यक्ष डॉ.प्रतिभा देवी शर्मा, डॉ. सुदर्शन प्रसाद, डॉ बिनोद कुमार, डॉ. विशाल कुमार, डॉ. राजकिशोर, डॉ संतोष कुमार साह, डॉ निकिता मिश्रा, अनिल गावस्कर, नीरज कुमार आदि मौजूद थे।

Hindustan 15-10-2025

स्वच्छ मन में ही होता है ईश्वर का निवास

साफ-सफाई करते वैज्ञानिक व छात्र-छात्राएं.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्याल के वैज्ञानिक, शिक्षक, कर्मचारी, छात्र-छात्राएं एवं दैनिक भोगी कर्मचारी ने अधिष्ठाता कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय डॉ. राम सुरेश की अध्यक्षता में विशेष स्वच्छता अभियान 5.0 चलाया. इसके तहत महाविद्यालय के पोर्टिको से लेकर सभी शेड के चारों ओर महाविद्यालय के अंदर के कमरों में व विश्वविद्यालय के सामने के क्षेत्र में साफ-सफाई की.

डीन डा रामसुरेश ने कहा कि स्वच्छ मन में ही ईश्वर का निवास स्थान होता है. स्वच्छता अभियान का आयोजन डॉ. दिनेश रजक, एनएसएस पदाधिकारी एवं सह-प्राध्यापक ने किया. कार्यक्रम में डॉ. देवेन्द्र कुमार, डॉ. प्रतिभा देवी शर्मा, डॉ. सुदर्शन प्रसाद, डॉ. बिनोद कुमार, डॉ. विशाल कुमार, डॉ. राजकिशोर आदि थे. दूसरी ओर डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मत्स्यिकी महाविद्यालय ढोली में विशेष स्वच्छता अभियान 5 के प्रथम चरण के अंतर्गत स्वच्छता और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पीपी श्रीवास्तव की अध्यक्षता में विशेष गहन स्वच्छता अभियान चलाया गया.

Prabhat Khabar 15-10-2025

भास्कर 16/10/25 पेज 16

ब्रोकोली, फूलगोभी, आलू व टमाटर की खेती में बेहतर मुनाफा : कृषि वैज्ञानिक

खेती-किसानी : डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड ने दी सब्जी की खेती की उन्नत तकनीक की जानकारी

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के किसान आने वाले नवंबर माह में ब्रोकोली, फूलगोभी, आलू, टमाटर, मटर, मूली, पालक, पत्ता गोभी, धनिया, आलू, गाजर आदि की खेती वैज्ञानिक विधि से करके बेहतर कमाई कर सकते हैं। इतना ही नहीं किसान कम समय में अधिक मुनाफा कमाने के लिए कम जगह में कई तरह के सब्जियों की खेती करके भी अच्छा से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। ये जानकारी डा. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र कुमार तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि ऐसे तो आजकल किसान सभी तरह के सब्जियों को पॉली हाउस के नियंत्रित वातावरण सालों भर उगा रहे हैं। परंतु ऑफ सीजन में उगाएं जाने वाले सब्जियों के फसलों में रोग एवं कीट अधिक लगते है जिसे नियंत्रित करने के लिए किसानों को सब्जियों के फसल पर अधिक रसायनो का प्रयोग करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में बाजारों में कोई भी व्यक्ति अत्यधिक रसायनों का उपयोग कर उगाएं गए सब्जियों को खरीदना और खाना बिल्कुल पसंद नहीं करता है। सभी लोगों का रुख अब ऑर्गेनिक सब्जियों के तरफ होने लगा हैं। उन्होंने कहा कि किसान अगर सब्जियों को उसके सीजन के अनुसार उगाते है तो उन्हें सब्जियों के फसल पर रसायनों का प्रयोग काफी कम करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि किसानों के लिए यह जानना आवश्यक है कि वे मौजूदा और आने वाले महीनों में किन किन सब्जियों की खेती करके बेहतर उत्पादन और लाभ कमा सकते हैं।

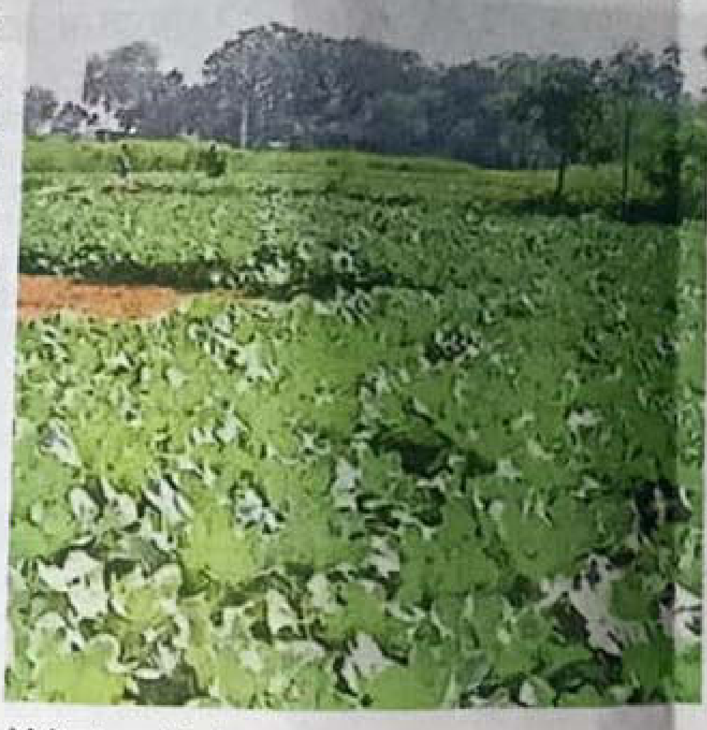

खेतों में लगी फूलगोभी की फसल।

अगले माह पहले सप्ताह में ही बुआई करें

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि फूलगोभी एक लोकप्रिय सब्जी है तथा यह क्रूसिफेरस परिवार से संबंधित है। फूलगोभी के पछेती किस्मों को किसान नवंबर के पहले सप्ताह तक खेतों में लगा सकते है। पूसा सनोबल, पूसा सनोबाल 1 आदि गोभी की प्रसिद्ध किस्में हैं जिनकी बुआई कर किसान अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे तो टमाटर की खेती करीब करीब पूरे देश में की जाती है। टमाटर की पछेती किस्मों को किसान नवंबर, दिसंबर, जनवरी और फरवरी महीने में लगा सकते है। टमाटर की देशी किस्मों में पूसा शीतल, पूसा-120, पूसा रूबी, पूसा गौरव, अर्का विकास, सोनाली आदि प्रमुख हैं। मूली की खेती मैदानी और पहाड़ी दोनों इलाकों में की जाती है। मैदानी इलाकों में इसकी बुआई सितंबर से जनवरी तक की जाती है। मूली की प्रसिद्ध किस्मों में जापानी सफेद, पूसा देशी, पूसा चेतकी, अर्का निशांत, जौनपुरी आदि महत्वपूर्ण हैं। पालक की खेती ऐसे तो बारहों महीने की जा सकती है। लेकिन इसकी बुवाई के लिए अक्टूबर से लेकर अप्रैल तक का महीना काफी उपयुक्त माना जाता है। पालक एक ऐसी फसल है जो कम समय और कम लागत में अच्छा मुनाफा देती है। किसान पालक की एक बार बुवाई कर उसकी कटाई 5 से 6 बार कर सकते है। पालक के महत्वपूर्ण प्रजातियों में जोबनेर ग्रीन, हिसार सिलेक्सन 26, पूसा पालक, पूसा हरित, आलग्रीन, पूसा ज्योति, बनर्जी जाइंट आदि शामिल हैं।

कहा कि आवश्यकता होन

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग की ओर से 19 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह अधिकतम तापमान में गिरावट आने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
16 अक्टूबर	31.0	19.4
17 अक्टूबर	31.4	19.4
दरभंगा		
16 अक्टूबर	31.4	19.4
17 अक्टूबर	31.4	20.0
पटना		
16 अक्टूबर	33.7	21.5
17 अक्टूबर	33.7	21.5

डिग्री सेल्सियस में

Dainik jagarn 16-10-2025

कौशल दक्षता के लिए प्रशिक्षण जरूरी

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के प्रसार शिक्षा निदेशालय में बुधवार को 'आरपीएल एवं डोमेन' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें कृषि विज्ञान केंद्रों के समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि हमें कौशल दक्षता की ओर बढ़ना होगा इसके लिए जरूरी है कि इस तरह की प्रशिक्षण को अधिक संख्या में आयोजित किया जाए। उन्होंने कहा कि आवश्यकता होने पर विश्वविद्यालय स्वयं ही इस तरह के प्रशिक्षणों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय तथा कृषि विज्ञान केंद्रों में इस तरह के प्रशिक्षण कराने के सभी दक्ष अध्यापक, ट्रेनर, मास्टर ट्रेनर, वित्तीय सहायता के साथ-साथ सभी जरूरी आधारभूत संरचना विश्वविद्यालय में पहले से ही मौजूद हैं। आवश्यकता है इस तरह के प्रशिक्षण से किसानों की कौशल दक्षता को और अधिक बढ़ाया जाए। उन्होंने कहा कि आगामी वित्तीय वर्ष से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों को भी इस योजना में जोड़ा जाएगा। विश्वविद्यालय को इस तरह के प्रशिक्षण से किसानों और समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को भी अध्ययन करने की आवश्यकता हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते बामेती के निदेशक

बामेती, पटना के निदेशक धनंजय पति त्रिपाठी ने कहा कि बिहार में कौशल विकास मिशन तथा वर्ष 2025-26 के लिए स्वीकृत परियोजनाओं की जानकारियां प्रदान की। तकनीकी सत्रों के माध्यम से उप निदेशक शारदा शर्मा, अजीत कुमार एवं अन्य द्वारा पोर्टल और नए कौशल केंद्र पंजीकरण आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशक डा. रत्नेश झा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत सभी अधिष्ठाता, निदेशक, कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख एवं उनके वैज्ञानिकगण, विश्वविद्यालय के अध्यापकगण, मास्टर ट्रेनर, तकनीकी कर्मचारी आदि थे।

Dainik Jagran 16-10-2025

पंचतंत्र सभागार में आरपीएल एवं डोमेन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

किसानों की कौशल दक्षता को और बढ़ाने की जरूरत : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय पूसा के प्रसार शिक्षा निदेशालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मंगलवार को आरपीएल एवं डोमेन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के समीक्षा बैठक की गयी. कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि हमें कौशल दक्षता की और बढ़ना होगा. इसके लिए जरूरी है कि इस तरह के प्रशिक्षण को अधिक संख्या में आयोजित करें.

उन्होंने कहा कि आवश्यकता होने पर विश्वविद्यालय स्वयं ही इस तरह के प्रशिक्षणों को वित्तीय सहायता उपलब्ध करायेगी. विश्वविद्यालय व कृषि विज्ञान केन्द्रों में प्रशिक्षण के लिए दक्ष अध्यापक, ट्रेनर, मास्टर ट्रेनर, वित्तीय सहायता के साथ सभी जरूरी आधारभूत संरचना विश्वविद्यालय में पहले से ही मौजूद हैं. आवश्यकता है इस तरह के प्रशिक्षणों से किसानों की कौशल दक्षता को और अधिक बढ़ाने की. आगामी वित्तीय वर्ष से सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों को भी इस योजना में जोड़ा जायेगा. बामेती पटना के निदेशक धनंजयपति त्रिपाठी मुख्य अतिथि रहे. उन्होंने बिहार कौशल विकास मिशन व वर्ष 2025-26 के लिए स्वीकृत परियोजनाओं की जानकारी दी. तकनीकी सत्रों के माध्यम से उप निदेशक शारदा शर्मा, अजीत कुमार एवं अन्य पोर्टल और नए कौशल केंद्र पंजीकरण आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया. निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत अधिष्ठाता, निदेशक, कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख एवं उनके वैज्ञानिक, अध्यापक, मास्टर ट्रेनर व तकनीकी कर्मचारी आदि ने भाग लिया. संचालन वैज्ञानिक डॉ बिनीता सतपथी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संजीव कुमार ने किया.

शुभारंभ करते कुलपति व अन्य.

Prabhat Khabar 16-10-2025

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा ने किसानों के लिये समसामयिक सुझाव जारी किये गये

पिछात धान की फसल को गंधी बग कीट से बचायें किसान

प्रतिनिधि,समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के द्वारा किसानों के लिये समसामयिक सुझाव जारी किये गये हैं. किसानों को सलाह दिया गया है कि बालियां निकलने तथा दूध भरने की अवस्था वाली पिछात धान की फसल में गंधी बग कीट की निगरानी करें. धान की इस अवस्था में यह कीट पौधों को अधिक क्षति पहुंचाती है, जिससे उपज में काफी कमी होता है. इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दुग्धावस्था वाली धान की फसल में बालियों का रस चूसना प्रारंभ कर देती हैं, जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है. इसके शरीर से विशेष प्रकार की बदबू निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है. इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते हैं. इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल 10 प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर 10-15 किलोग्राम की दर से भूरकाव 8 बजे सबुह से पहले अथवा 5 बजे शाम के बाद बालियों पर करें. खतों के आसपास के मेड़ों पर दवा का भूरकाव आवश्य करें. शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान अगात मक्का की तैयार फसलों की कटाई करें. रबी फसल के लिए खेत की तैयारी करें. फसलों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्र पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेड़कर मिला दें. खड़ी फसलों में कीट व्याधि का निरीक्षण करते रहें. 20 अक्टबूर के बाद शरदकालीन गन्ना की रोपाई की जा सकती है. शरदकालीन गन्ना, मसूर, मटर, राजमा, मेथी, लहसुन, धनियां, राई एवं सर्युमुखी फसलों के समय से बोआई के लिए खेतों की तैयारी करें. खेत से सटे मेड़ों,नालों एवं आसपास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलों की साफ-सफाई आवश्य करें, ताकि इन जंगलों में छिपे कीट व रोगों के कारक आदि सम्पूर्ण रुप से नष्ट हो जाए. गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेड़कर एवं जुताई कर मिला दें. यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्र बढ़ाती है. खेतों में अंकुरण के लायक नमी बनाये रखने के लिए खाली खेतों की प्रत्येक जुताई के बाद पाटा आवश्य चला दें. उंचास खेतों में किसान तोरी की बोआई शुरु करें. तोरी की आरएयुटीएस-17,पंचाली, पीटी-303 एवं भवानी किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है. खेत की अंतिम जुताई के समय 30 किलोग्राम नत्रेजन, 40 किलोग्राम स्फुर, 40 किलोग्राम पोटास तथा 20 से 30 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें. जिंक की कमी वाले खेत में 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें. आलू, मक्का, चना, मटर, राजमा, मेथी तथा लहसुन फसलों के समय से बोआई के लिए खेतों की तैयारी करें. गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेड़कर एवं जुताई कर मिला दें. अंकुरण के लायक नमी बनाये रखने के लिए खाली खेतों की प्रत्येक जुताई के बाद पाटा आवश्य चला दें. मिर्च, फूलगोभी, टमाटर एवं बैगन की फसल में आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई करें. फूलगोभी की फसल में पत्ती खाने वाली कीट की निगरानी करें. इस कीट के पिल्लू फूलगोभी की मध्यवाली पत्तियों तथा सिरवाले भाग को अधिक क्षति पहुंचाती है. शुरुआती अवस्था में यह पिल्लू पत्तियों की निचली सतह में सुरंग बनाकर एवं उसके अन्दर पत्तियों को खाता है. इस कीट से बचाव हेतु स्पनोसेड 48 इसी दवा एक मिली प्रति 4 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें. फूलगोभी की पिछात किस्मों जैसे माघी, स्नोकिंग, पूसा स्नोकिंग-1, पूसा-2, पूसा स्नोवॉल-16, पूसा स्नोवॉल के-1 की बोआई नर्सरी में करें. सितम्बर में बोयी गई अरहर की फसल में निकाई-गुड़ाई करें. जून-जुलाई में बोयी गई अरहर में कीट- व्याधि का निरीक्षण करें.

दैनिक जागरण 19/10/25 पेज 3

आज का मौसम

कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग ने 22 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। इसमें उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम शुष्क बने रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह में अधिकतम तापमान में गिरावट के साथ तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
19 अक्टूबर	33.0	27.0
20 अक्टूबर	33.5	27.0
	दरभंगा	
19 अक्टूबर	33.5	27.0
20 अक्टूबर	33.5	27.5
	पटना	
19 अक्टूबर	34.6	28.0
20 अक्टूबर	34.6	28.0

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 20/10/25 पेज 7

आज का मौसम

कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग ने 22 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। इसमें उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम शुष्क बने रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह में अधिकतम तापमान में गिरावट के साथ तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
20 अक्टूबर	32.0	18.4
21 अक्टूबर	32.2	18.4
	दरभंगा	
20 अक्टूबर	32.2	18.4
21 अक्टूबर	32.2	19.0
	पटना	
20 अक्टूबर	34.6	22.0
21 अक्टूबर	34.6	22.0

डिग्री सेल्सियस में

22/10/25 पेज 14

गेहूं बुआई केलिए किसान जीरो टिलेज मशीन की करें साफ-सफाई : कृषि अभियंता

कृषि : नियमित साफ-सफाई और रख-रखाव से मशीन की उम्र बढ़ने के साथ-साथ वह ज्यादा समय तक चलती है, मशीन व तकनीक से समय व खर्च की होती है बचत

भास्कर न्यूज | पूसा

रबी मौसम के फसलों खासकर गेहूं की बुआई का समय अब बेहद नजदीक आ चुका है। ऐसे किसान जिनके पास जीरो टिलेज मशीन है और वे जीरो टिलेज मशीन से ही गेहूं की बुआई करते हैं। वे सभी मशीन की साफ सफाई व उसकी सर्विसिंग अच्छे से करा लें।

जीरो टिलेज मशीन की सफाई ही गेहूं बुआई के दौरान बीज और खाद की सही मात्रा और बीज सही गहराई पर गिर रही हैं इसको सुनिश्चित करती हैं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के अधीनस्थ केवीके बिरौली की विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियंत्रण) इंजीनियर विनीता कश्यप ने बताया की कृषि उपकरण रखने वाले किसानों को अपने कृषि उपकरण को उपयोग में लाने से पहले कुछ चीजों की जांच करनी चाहिए तथा उसके बाद ही उसे खेतों में प्रयोग करना चाहिए।

केवीके में जीरो टिलेज मशीन से हो रही बुआई। (फाइल फोटो)

जीरो टिलेज मशीन आधुनिक कृषि का एक महत्वपूर्ण उपकरण है

उन्होंने कहा की जीरो टिलेज मशीन आधुनिक कृषि का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इससे फसल की बुआई बिना जुताई के सीधे तौर पर की जाती है। मशीन की सही देखभाल और समय समय पर उसमें तेल डालने व ग्रीसिंग करने से मशीन की कार्यक्षमता लंबे समय तक बनी रहती है और मशीन की उम्र भी बढ़ती है। विनीता कश्यप ने बताया कि जीरो टिलेज मशीन के चेन में हर 20 से 25 घंटे के उपयोग के बाद तेल लगाएं ताकि वह अच्छा चले और टूटे नही। नट-बोल्ट की कसावट भी जांचें। डिस्क ओपनर के ब्लेड घिस जाने पर उन्हें तुरंत बदलें या तेज करें। मशीन के कैलिब्रेशन को हर सीजन की शुरुआत में अवश्य जांचें ताकि बीज और खाद का वितरण समान रूप से हो सकें।

उपयोग से पहले और बाद में मशीन की ग्रीसिंग भी जरूरी

इंजीनियर विनीता कश्यप ने बताया कि जीरो टिलेज के उपयोग से पहले और बाद में मशीन के सभी गतिशील भागों पर ग्रीस लगाना जरूरी होता है। किसान मशीन के बीज और खाद वितरण तंत्र, चेन-स्प्रॉकेट, गियर बॉक्स, ट्रॉली व्हील, सीड मेटरिंग शाफ्ट, फरो ओपनर आदि में तेल डाले तथा ग्रीस लगाएं। बियरिंग तथा शाफ्ट के जोड़ों में उच्च गुणवत्ता वाली ग्रीस का प्रयोग करें। यदि मशीन लंबे समय तक प्रयोग में नही थी तो सभी जोड़ों और घूमने वाले भागों पर हल्का तेल लगाकर उसे घुमाकर उसकी जांच करें। ग्रीसिंग निपल्स से समय-समय पर मशीन के विभिन्न हिस्सों में ग्रीस भरना भी आवश्यक है। इससे मशीन की उम्र बढ़ती है।

दैनिक जागरण 22/10/25 पेज 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 28 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में मौसम शुष्क बने रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
22 अक्टूबर	33.4	20.0
23 अक्टूबर	33.4	20.4
	दरभंगा	
22 अक्टूबर	33.4	20.4
23 अक्टूबर	34.0	20.4
	पटना	
22 अक्टूबर	35.8	21.5
23 अक्टूबर	35.8	21.5

डिग्री सेल्सियस में

भास्कर 23/10/25 पेज 14

कृषि • आलू में जैव उर्वरकों के प्रयोग से बढ़ेगी गुणवत्तायुक्त उपज, मिट्टी का स्वास्थ्य भी रहेगा बेहतर

किसान जैव विधि से करें आलू की खेती कम लागत में बेहतर पैदावार मिलेगा

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के किसानों ने आलू की रोपनी शुरू कर दी हैं। इसकी खेती बिहार में बड़े पैमाने पर की जाती हैं। यह एक प्रमुख सब्जी फसल है जिसकी उपज और गुणवत्ता दोनों को बेहतर बनाये रखने के लिए जैव उर्वरकों का प्रयोग एक प्रभावी, पर्यावरण-अनुकूल और किफायती तरीका है। बिहार के आलू उत्पादक किसान आलू की खेती में रासायनिक उर्वरकों के बजाय जैव उर्वरकों का इस्तेमाल कर मृदा के स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रख सकते हैं। जैव उर्वरक फसल को लंबे समय तक पोषण भी प्रदान करता हैं। ये जानकारी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ संचालित कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के उद्यान विशेषज्ञ डॉ.धीरु कुमार तिवारी ने दी है। उन्होंने बताया कि जैव उर्वरक वे सूक्ष्मजीव होते हैं जो पौधों को आवश्यक पोषक तत्व जैसे नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम को उपलब्ध कराने में मदद करते हैं। ये मृदा की उर्वरता बनाए रखते हैं और पौधों की वृद्धि को प्रोत्साहित भी करते हैं। फॉस्फेट सॉलुबिलाइजिंग बैक्टीरिया (पीएसबी) मिट्टी में मौजूद फॉस्फोरस को घुलनशील बनाकर उसे पौधों को उपलब्ध कराते रहता है। इसकी 2 से 3 किलोग्राम मात्रा प्रति एकड़ मिट्टी में मिलाकर या आलू के कंद उपचार कर आलू की फसल में फास्फोरस की उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है। इससे भी आलू के कंदो की गुणवत्ता तथा उपज में वृद्धि होती है।

केवीके में ट्रैक्टर से की गई आलू की जैव विधि रोपाई। (फाइल फोटो)

पोटाश मोबिलाइजिंग बैक्टीरिया पौधों के लिए उपयोगी, घटेगी उर्वरक की निर्भरता

पोटाश मोबिलाइजिंग बैक्टीरिया (केएमबी) भी मिट्टी में मौजूद पोटाश को पौधों के लिए उपयोगी बनाता है। इसकी 2 किलोग्राम मात्रा प्रति एकड़ आलू लगाने वाले खेत के मिट्टी में मिलाकर इसका उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावे माइकोराइजा भी जड़ों की क्षमता बढ़ाता है जिससे पोषक तत्व और पानी का अवशोषण बेहतर होता है। 5 किलोग्राम माइकोराइजा प्रति एकड़ आलू रोपाई के समय मिट्टी में मिलाकर इसका भी उपयोग किया जा सकता है। इन सबके अलावे ट्राइकोडर्मा आलू में मिट्टी जनित लगने वाले रोगों को नियंत्रण करने और पौधों की वृद्धि में सहायक होता है। किसान 2 किलोग्राम ट्राईकोडर्मा प्रति एकड़ मिट्टी में मिलाकर या आलू के कंद को उपचारित कर इसका भी प्रयोग किया जाना चाहिए। अंततः उन्होंने कहा कि जैव उर्वरकों के उपयोग से ना केवल उपज में वृद्धि होती है बल्कि रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता भी कम होती है जिससे लागत में कमी आती है।

एजोस्पिरिलम जीवाणु और एजोटोबैक्टर बैक्टीरिया आलू के पैदावार को बढ़ाने का करते हैं काम

कृषि वैज्ञानिक के अनुसार एजोस्पिरिलम (जीवाणु) और एजोटोबैक्टर (नाइट्रोजन फिक्सिंग बैक्टीरिया) दोनों मिट्टी में रहने वाले नाइट्रोजन-स्थिरीकरण करने वाले जीवाणु हैं जो पौधों की वृद्धि और फसल की पैदावार को बढ़ाते हैं। एजोटोबैक्टर एक मुक्त-जीवित वायवीय जीवाणु है जो मिट्टी में वायुमंडलीय नाइट्रोजन को उपयोगी रूप में परिवर्तित करता है। दूसरी ओर एजोस्पिरिलम मुख्य रूप से पौधों की जड़ों में पाया जाता है और जड़ों के साथ एक सहजीवी संबंध बनाता हैं। यह जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण और वृद्धि-प्रवर्तक पदार्थ बनाने में मदद करता है। दोनों का उपयोग जैव-उर्वरक के रूप में किया जाता है जो रासायनिक उर्वरकों का एक पर्यावरण अनुकूल विकल्प है। उन्होंने कहा कि एजोस्पिरिलम और एजोटोबैक्टर वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करता है जिससे आलू को नाइट्रोजन की पूर्ति होती रहती है। बिहार के आलू उत्पादक किसान एजोस्पिरिलम (जीवाणु) और एजोटोबैक्टर (नाइट्रोजन फिक्सिंग बैक्टीरिया) की 2 से 3 किलोग्राम की मात्रा को प्रति एकड़ आलू लगाने वाले खेत की मिट्टी में मिलाकर इसका उपयोग कर सकते है। किसान इससे आलू के बीज को उपचारित करके भी रोपाई कर सकते हैं।

दैनिक जागरण 23.10.13

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 28 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में मौसम शुष्क बने रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है।

भास्कर 24/10/25 पेज 16

पशुपालक बरतें सावधानी • वैज्ञानिक सुझावों को अपनाकर बीमारी से पशुओं को बचाने का दिया गया सुझाव

विषाणु जनित संक्रमण से पशुओं में फैल रहा लंपी रोग
लक्षण दिखते ही किसान शुरू करें उपचार : पशु वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

बीमार मवेशियों को रखें दूसरे जानवरों से अलग, कमजोर मवेशियों के लिए बीमारी जानलेवा

मौजूदा समय में पशुओं में लगने वाली विषाणु जनित संक्रामक बीमारी लंपी स्किन ने देश के विभिन्न राज्यों के साथ-साथ खासकर उत्तर बिहार के पशुपालकों को काफी परेशान करके रखा है। इस बीमारी से प्रतिदिन काफी संख्या में पशुओं की मौत हो रही हैं। खासकर कमजोर पशुओं को इस बीमारी से बचा पाना असंभव हो जा रहा हैं। लंपी स्किन बीमारी को कई पशुपालक त्वचा रोग, ढेलेदार त्वचा रोग, गांठदार त्वचा रोग आदि के नाम से भी जानते है। यह बीमारी कैप्रिपॉक्स नाम के वायरस से फैलती है। बिहार के पशुपालक कुछ सावधानियों, दवाइयों एवं पशुओं के लिए जारी किए जा रहे वैज्ञानिक सुझावों को अपनाकर इस बीमारी से अपने पशुओं को बचा सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के अधीनस्थ राष्ट्रीय गोकुल मिशन पश्चिम चंपारण के वरीय पशु वैज्ञानिक सह प्राध्यापक डॉ. रंजन कुमार ने दी है। उन्होंने कहा कि यह वायरस उसी पॉक्सविरिडे वायरस फैमिली से आता है जिससे पशुओं में स्मॉलपॉक्स यानी चेचक और मंकी पॉक्स जैसी बीमारियां लगती हैं। लंपी त्वचा रोग मच्छर, मक्खियों, जूं और पिस्सू जैसे जीवों के जरिए फैलने वाली चेचक जैसी एक संक्रामक बीमारी है। उन्होंने बताया कि भारत के पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, एमपी, यूपी, बिहार आदि राज्यों में पिछले दो साल से लंपी स्किन डिजीज काफी कहर बरपा रहा हैं। इस वजह से अब तक लाखों पशुओं की मौत हो चुकी है। इस जानलेवा बीमारी के संक्रमण से पशुओं में 50 प्रतिशत से ज्यादा दूध उत्पादन भी घट जाता है।

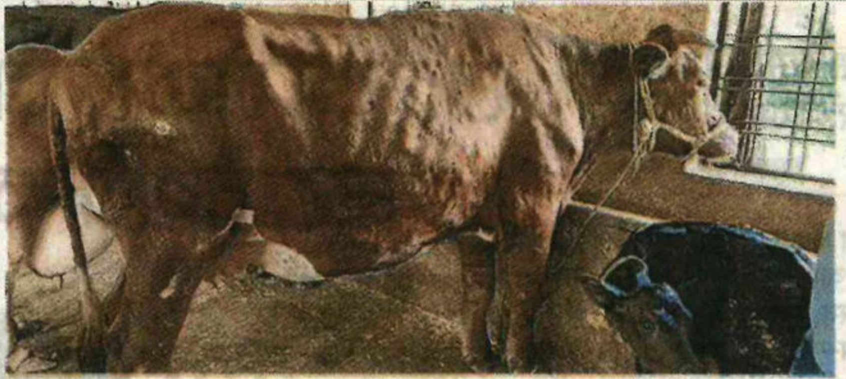

लंपी बीमारी से ग्रसित मवेशी।

किसान रखें ध्यान... बीमार पशुओं में दिखने वाले लक्षण

पशु वैज्ञानिक ने बताया की इस रोग के प्रथम लक्षण दिखने में लगभग 1 से 2 सप्ताह तक का समय लग सकता है। पशुओं में सामान्त: तेज बुखार के साथ-साथ खासकर गाय व भैंसों की नाक बहने लगती है तथा आंखों से और मुंह से लार गिरने लगता है। पशुओं के शरीर पर 10 से 50 एमएम की गोलाई वाले गांठें निकल आती हैं जो धीरे-धीरे घाव का रूप ले लेती है। पशु के जोड़ो में सूजन आ जाती पशु चलने में असक्षम हो जाता हैं। कई बार पशुओं के पूरे पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र और शरीर के लगभग सभी आंतरिक अंगों में भी यह घाव हो जाता हैं जिससे पशु के अंदर कमजोरी, भूख की कमी, अचानक दुग्ध उत्पादन में कमी आदि की समस्याएं दिखने लगती है। लंपी बीमारी से संक्रमित मवेशियों को ठीक होने में जहां दो हफ्ते से एक महीने तक का समय लग सकता है। वहीं इस बीमारी से गंभीर रूप से संक्रमित मवेशी को इस वायरस से उबरने में करीब 6 महीने तक का वक्त भी लग जाता हैं। समय से और सटीक उपचार न होने पर पशु की मृत्यु हो जाती है।

एहतियात भी जरूरी... बीमारी से बचाव के लिए गोशाला को गंदगी से मुक्त एवं साफ सुथरा रखें

पशु वैज्ञानिक ने बताया की इस बीमारी का सबसे पहला और प्रभावशाली बचाव का जरिया पशुओं का समय समय पर टीकाकरण हैं। उन्होंने बताया कि वायरस का कोई खास इलाज नहीं होता हैं। इस बीमारी के लगने पर पशुओं को दूसरे पशुओं से काफी दूर रखें तथा संक्रमित पशु का उपचार करवाएं। यह बीमारी न लगें इसके लिए पशुपालक अपने गोशाला को गंदगी से मुक्त एवं साफ सुथरा रखें, पानी का जमाव नहीं होने दें। समय-समय पर कीटनाशकों का उपयोग कर मक्खियों, कीटों एवं टिक्स को नियंत्रित करते रहें। इतना ही नही अपने गोशाला में अनावश्यक पशुओं और लोगों का प्रवेश भी वर्जित रखें। उन्होंने बताया कि इस समय इस बीमारी को नियंत्रित करने के लिए पशु चिकित्सक सरकार के निर्देशानुसार बकरी तथा भेड़ को चेचक से बचाने वाले टीके का उपयोग कर रहे हैं जो प्रभावी भी है। उन्होंने कहा कि पशुपालक उक्त सभी बातों पर ध्यान रखते हुए तथा सजग रहकर इस संक्रामक बीमारी से अपने पशुओं को बचा सकते हैं।

डॉक्टर से लें सलाह... इन दवाओं का करें उपयोग

लंपी स्किन बीमारी से संक्रमित पशुओं का उपचार कराने के दौरान पशुपालक निम्नलिखित दवाइयों का सहारा ले सकते हैं। इस संक्रमण के दौरान बुखार को नियंत्रित करने के लिए मिलोनेक्स प्लस की सुई जानवर के वजन के अनुसार डोज में देना चाहिए। लंपी स्किन के दौरान आईभरमैकटीन दवाई का भी निर्धारिज डोज पशु के चमड़े में देना चाहिए। पशु का लीवर स्वस्थ्य करने रहे इसके लिए लीवर टॉनिक भी निर्धारित मात्रा में पिलाना चाहिए। इसके अलावे पशुओं को खनिज मिश्रण भी 50 ग्राम प्रति दिन खिलाना चाहिए।

भास्कर 25|10|25 पेज 15

कुलपति ने छठ घाट का निरीक्षण कर दिए निर्देश

निरीक्षण करते कुलपति।

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने विवि परिसर स्थित गोराई घाट का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सभी कमेटी के सदस्यों एवं पदाधिकारी को कई तरह के सुझाव भी दिए। उन्होंने घाट की साफ-सफाई और छठव्रतियों की सुरक्षा पर विशेष जोड़ दिया। उन्होंने छठ व्रतियों को कोई भी कठिनाई का सामना न करना पड़े इसके लिए पानी में सुव्यवस्थित तरीके से बांस बल्ला लगाकर घेराव करने का आदेश भी दिया। मौके पर कुलपति के सचिव अनिल कुमार शर्मा ,सम्पदा पदाधिकारी सी के झा ,सुरक्षा पदाधिकारी बिपिन कुमार, अध्यक्ष शिरीश कुमार ,सचिव जय प्रकाश ,संयोजक श्री राम सिंह,प्रदीप कुमार ,विकाश कुमार ,प्रभात कुमार चौधरी,राम कुमार मनीष कुमार आदि लोग मौजूद थे।

दैनिक जागरण 24/10/25 पेज 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 28 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में मौसम शुष्क बने रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
24 अक्टूबर	33.4	20.0
25 अक्टूबर	33.4	20.4
	दरभंगा	
24 अक्टूबर	33.4	20.4
25 अक्टूबर	34.0	20.4
	पटना	
24 अक्टूबर	35.8	21.5
25 अक्टूबर	35.8	21.5

डिग्री सेल्सियस में

आस्था | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित पूसा स्टाफ क्लब के सभागार में चित्रगुप्त पूजा का आयोजन किया गया

चित्रांश परिवारों ने भगवान चित्रगुप्त को पेश किया बही-खाता

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि परिसर स्थित पूसा स्टाफ क्लब के सभागार में गुरुवार को चित्रगुप्त पूजा का आयोजन किया गया। चित्रगुप्त पूजा समिति, पूसा के तत्वाधान में आयोजित समारोह में चित्रांश परिवार से जुड़े श्रद्धालुओं समेत विवि के कुलपति डॉ पीएस पाण्डेय, निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमण त्रिवेदी, कुलपति के सचिव अनिल शर्मा, सम्पदा पदाधिकारी डॉ सीके झा, वैज्ञानिक डॉ मुकेश श्रीवास्तव, डॉ पीडी शर्मा, डॉ आरती सिन्हा, डॉ मनीष कुमार आदि ने हिस्सा लिया। इस दौरान पंडित चिरंजीवी झा ने विधिवत पूजा अर्चना कराते हुए पूजा के महत्व पर विस्तार से चर्चा की।

गुरुवार को पूसा कृषि विवि परिसर में आयोजित चित्रगुप्त पूजा में कुलपति समेत अन्य।

मौके पर सुधीर वर्मा, एस एन नारायणन, धीरेन्द्र स्वरूप, सचिव रमेंद्र स्वरूप, मनीष कुमार, अनिल कुमार, मनोज श्रीवास्तव आदि लोग मौजूद थे।

चित्रांश परिवार ने धूमधाम से की भगवान चित्रगुप्त की पूजा-अर्चना: रोसड़ा। श्री चित्रगुप्त पूजा समिति के द्वारा मिर्जापुर स्थित चित्रगुप्त मंदिर में चित्रगुप्त पूजनोत्सव का आयोजन धूमधाम से किया गया। चित्रांश परिवार के लोगों ने पूजा अर्चना में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। चित्रांश परिवार के सदस्यों ने मंदिर में भगवान चित्रगुप्त की पूजा की।

जिला चित्रगुप्त मंदिर में चित्रगुप्त पूजा

समस्तीपुर, निस। हर साल की तरह इस बार भी शहर के कचहरी रोड काशीपुर चित्रगुप्त लेन में जिला का प्राचीन श्री श्री 108 चित्रगुप्त मंदिर में गुरुवार को काफी धूमधाम व श्रद्धा भक्ति के साथ चित्रगुप्त पूजा की गई। जिला चित्रांश समिति की ओर से पूजा की गई, जिसमें जिले के विभिन्न इलाकों से काफी संख्या में चित्रांश परिवार के श्रद्धालु शामिल थे। पूजा पर यजमान के रूप में ए. के. लाल ने विधि विधान से पूजा की। पूजा के दौरान आरती व प्रसाद वितरण के बाद पूजा की समाप्ति हुई। इस दौरान समिति के आय व्यव का लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर जिला चित्रांश समिति के सदस्यों में संरक्षक सुबोध कुमार सिन्हा, शिवचंद्र प्रसाद राजगृहार, समदर्शी राजगृहार, चारूदत्त वर्मा, श्याम मोहन प्रसाद, मनीष कुमार कर्ण, अमरेंद्र भूषण, समरेन्द्र भूषण, केशव किशोर प्रसाद उर्फ संतोष जी, प्रवीण कुमार सिन्हा आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

नगर पंचायत के गठन के चार वर्ष बीतने के बाद भी कचरा प्रबंधन की समुचित व्यवस्था नहीं हुई

छठ घाट जाने वाली सड़क पर कचरे का ढेर

हिन्दुस्तान 24/10/25 पेज 5

परेशानी

सिंधिया, निज संवाददाता। नगर पंचायत के गठन के चार वर्ष बीतने के बाद भी क्षेत्र में कचरा प्रबंधन की समुचित व्यवस्था नहीं हो पायी है। इसके कारण नगर को स्वच्छ व सफाई युक्त बनाने का सपना आज भी अधूरा है। नगर के पौष इलाके में सड़क किनारे ही आज भी कचरा यत्र तत्र फेंका जा रहा है। इसके दुर्गंध से नगर वासियों व राहगीरों का जीना मुहाल है। इसकी शिकायत वार्ड 4 के सदस्य सतीश कुमार सिंह उर्फ गुड्डू समेत कई प्रबुद्ध लोगों ने कार्यपालक पदाधिकारी से की है। दिये गये आवेदन में लोगों ने कहा है कि छठ पर्व निकट आ गया है। छठ व्रती इसी मार्ग से होकर छठ घाटतक भगवान भास्कर की उपासना करने जायेंगे। इसको ध्यान में रखते हुये सड़क किनारे फेंके गये कचरे का उठाव जल्द कराने के साथ ही सड़क किनारे कचरा फेंकना बंद कराने की गुहार लगायी है। शिकायत के बावजूद अब तक सफाई एजेंसी व स्वच्छता प्रभारी की ओर से कोई पहल नहीं जा रही है। जिससे नगर वासियों में नगर कर्मियों व जनप्रतिनिधियों के प्रति काफी आक्रोश है। उधर, डा. राजकुमार सिंह, संतोष कुमार राम, विनोद कुमार सिंह, सुधीर कुमार सिंह, बबलू कमती, राजो चौपाल, विमल चौपाल बताते है कि पैकरा चौक, ब्लॉक के पास, वार्ड चार के मुख्य पथ समेत दर्जनों स्थानों पर सड़क किनारे अन्य जगहों से संग्रहित कर गिला एवं सूखा कचरा सड़क किनारे फेंक दिया जाता है। इससे अब सड़ांध की बदबू आने लगी है। छठव्रतियों को इस मार्ग से होकर छठ घाट तक जाने में काफी परेशानी होगी। दूसरी शिकायत करने पर पैकरा चौक समेत कई स्थानों पर कचरे के ढेर में आग लगा दिया गया। इस बाबत संपर्क करने पर कार्यपालक पदाधिकारी प्रिंस कुमार ने बताया कि इस समस्या का जल्द ही समाधान कर लिया जाएगा।

सिंधिया में सड़क किनारे फेंका गया कचरा।

- **कचरों से उठ रही दुर्गंध से आसपास के लोगों व राहगीरों का जीना मुहाल**

पूसा के गोराई घाट के निरीक्षण के दौरान निर्देश देते वीसी।

कृषि विवि के कुलपति ने छठ घाटों का निरीक्षण कर दिया निर्देश

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने गोराई घाट का निरीक्षण किया। उन्होंने नदी के जलस्तर में हो रही गिरावट पर चर्चा की। साथ ही छठ घाट निर्माण को लेकर संबंधित लोगों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। इस क्रम में जलस्तर के अनुरूप नदी में बेरिकेडिंग करने, छठ घाट व पहुंच पथ की साफ सफाई व अन्य जरूरी उपाय करने आदि का निर्देश दिया।

छठव्रतियों की सुविधा के लिए कुलपति ने दिये निर्देश

प्रभात खबर - 24/10/25 P - 05

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित गोराई घाट में कुलपति डा पीएस पांडेय ने निरीक्षण के दौरान कमेटी के सदस्यों व पदाधिकारी कई आवश्यक निर्देश दिये. यह सुझाव दिया कि घाट की पूर्णरूप से साफ-सफाई एवं सुरक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि छठव्रतियों को किसी भी तरह की कठिनाई का सामना न करना पड़े. साथ ही जल स्तर में वृद्धि को देखते हुए पानी में सुव्यवस्थित घेराव करने का निर्देश दिया. जिससे नदी के पानी के अंदर गहराई में व्रती न जा सकें. मौके पर कुलपति के सचिव अनिल कुमार शर्मा, सम्पदा पदाधिकारी डॉ सीके झा, सुरक्षा पदाधिकारी विपिन कुमार, अध्यक्ष शिरीश कुमार, सचिव जय प्रकाश, संयोजक श्रीराम सिंह, प्रदीप कुमार, विकास कुमार, प्रभात कुमार चौधरी, राम कुमार, मनीष कुमार आदि मौजूद थे. ज्ञात हो कि आस्था का महापर्व छठ के शुरु होने में अब महज एक दिन ही शेष बचे हैं. ऐसे में प्रखंड क्षेत्र के कई छठ घाटों की स्थिति साफ-सफाई के अभाव में पर्व के योग्य नहीं हो सका है. कुछ स्थानों पर लोग अपने स्तर से घाटों की सफाई में जुटे हैं. परंतु प्रशासनिक सहयोग नहीं मिलने के कारण इसमें सफलता पूरी तरह से नहीं मिल पा रही है.

घाटों का निरीक्षण करते कुलपति.

भास्कर 25/10/25 पेज 18

कृषि • समस्या को कम करने के लिए कृषि वैज्ञानिक और किसानों को एक साथ मिलकर कृषि से जुड़े कार्यों को करना होगा

जलवायु परिवर्तन किसानों के लिए बड़ी समस्या

भास्कर न्यूज़ | पूसा

जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि को लाभकारी बना पाना किसानों के लिए एक बड़ी समस्या है। इस समस्या को कम करने के लिए कृषि वैज्ञानिक और किसान दोनों को एक साथ एक ट्रैक पर चलकर कृषि से जुड़े कार्यों को करना होगा। बिहार के किसान मौसमीय परिवर्तन के अनुसार फसलों के प्रभेदों को चयनित कर उसकी खेती, ड्रिप सिंचाई तकनीक, जैविक विधि, फसल विविधीकरण, मिश्रित खेती, शून्य जुताई तकनीक आदि को अपनाकर जलवायु परिवर्तन के दौर में भी खेती से कम लागत में ज्यादा उत्पादन और मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। ये बातें डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्लाय पुसा के निदेशक प्रसार शिक्षा सह जलवायु परिवर्तन विभाग से जुड़े वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रत्नेश झा ने एक खास बातचीत के दौरान कही। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन लंबे समय तक चलने वाला परिवर्तन है। जलवायु परिवर्तन अपने जहरीले स्तर के साथ लंबे समय तक बना रहता है। ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन जलवायु परिवर्तन का ही भाग है। कृषि जलवायु परिवर्तन का लक्ष्यकर्ता और योगदानकर्ता दोनों है। उन्होंने बताया कि कृषि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन का दूसरा सबसे बड़ा स्त्रोत है। वर्ष 2014 में भारत के अंदर उत्सर्जीत कुल ग्रीन हाउस गैसों में 3402 मिलियन मीट्रिक टन कार्बन डाईऑक्साइड गैस था जो कुल वैश्विक ग्रीन हाउस गैस का 6.55 प्रतिशत था। इन जहरीले गैसों के उत्सर्जन का सबसे बड़ा मुख्य कारण कृषि में रासायनिक कीटनाशकों एवं उर्वरकों का उपयोग तथा कम पोषक तत्वों का उपयोग आदि हैं।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए फसल में ड्रिप सिंचाई तकनीक हो रहा पटवन।

खेती पर संकट : कैसे पड़ता है कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

निदेशक ने बताया कि फिलहाल इस दुनिया में शायद ही कोई ऐसा देश व प्रदेश होगा जहां जलवायु परिवर्तन का कोई प्रभाव न पड़ा हो। कृषि विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील है। कृषि पर जलवायु परिवर्तन के विभिन्न प्रकार के खतरे है जैसे साल दर साल बढ़ रहा तापमान, कार्बन डाईऑक्साइड का अत्यधिक उत्सर्जन, कही सुखार तो कही वर्षा से बाढ़, खरपतवार की वृद्धि, कीट और रोगों का बढ़ता प्रकोप आदि। जलवायु परिवर्तन में हर किसी को नुकसान पहुंचाने की क्षमता है लेकिन किसान इसकी चपेट में सबसे अधिक आते हैं और इससे सर्वाधिक प्रभावित भी होते हैं। साल 1970 के बाद से वैश्विक औसत तापमान 1.7 डिग्री सेल्सियस प्रति शताब्दी की दर से बढ़ रहा है। उच्च तापमान फसलों की गुणवत्ता और उपज दोनों को कम कर देता है और यह खरपतवार और कीट के प्रसार को भी प्रोत्साहित करता है। उच्च तापमान के कारण फसलें जल्दी परिपक्वता की ओर चली जाती है जिससे उनकी उपज में कमी आ जाती है। उन्होंने कहा कि भारत में 120 मिलियन हेक्टेयर ऐसी भूमि है जो किसी न किसी प्रकार की कमी से ग्रस्त है और उस जमीन पर खेती भी लगभग नही हो पा रही हैं। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिकों ने एक अनुमान लगाया है कि आने वाले 80 वर्षों में खरीफ फसलों के मौसम के दौरान औसत तापमान में 0.7 से 3.3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। इतना ही नही इसके साथ-साथ बारिश भी काफी जोर शोर से प्रभावित होगी जिस वजह से रबी के मौसम में गेहूं की उपज में 22 प्रतिशत की गिरावट आई है।

वर्षा जल का करें प्रबंधन

वैज्ञानिक ने बताया कि वाटर शेड प्रबंधन के माध्यम से हम सबों को वर्षा जल को सिंचित करते हुए सिंचाई के रूप मे प्रयोग करने की जरूरत है। इससे हमें जहां एक ओर सिंचाई की सुविधा मिलेगी वहीं दूसरी ओर भू जल पुनर्भरण में भी मदद मिलेगी। किसानों को ड्रिप सिंचाई तकनीक को अपनाने की जरूरत है।खेती में रासायनिक खादों व कीटनाशकों के इस्तेमाल से जहां मृदा की उत्पादकता घटती है। वही उत्पादित अन्न भोजन श्रृंखला के माध्यम से मानव शरीर में भी पहुंच जाता है। अत: हमें जलवायु परिवर्तन के दौर में जैविक खेती करने की तकनीकों पर अधिक से अधिक जोर देना चाहिए। एकल कृषि के बजाय समन्वित खेती में जोखिम कम होता है। समन्वित खेती में अनेक फसलों का उत्पादन किया जाता है जिससे यदि एक फसल किसी प्रकोप से समाप्त हो जाये तो दूसरी फसल से किसान की रोजी रोटी चल सकें। जलवायु परिवर्तन से फसल को बचाने के लिए किसान मौसम पूर्वानुमान के अनुसार ही खेतीबाड़ी का कार्य संपन्न करें। उन्होंने कहा कि कुलपति डॉ. पीएस पांडे के कुशल मार्गदर्शन एवं समुचित निर्देशन में जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम परियोजना संचालित की जा रही है। इस परियोजना के तहत किसानों को निरंतर प्रशिक्षण देकर किसानों को जलवायु अनुकूल खेती करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

भास्कर 25/10/25 पेज 15

मौसम • पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 30-32 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है

उत्तर बिहार के जिलों में 29 अक्टूबर तक आसमान में हल्के बादल छाए रहने की संभावना, चलेगी पछिया हवा

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं। इस अवधि में मौसम के आमतौर पर शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 30-32 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 21-22 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस बीच पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 2-3 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से अगले एक-दो दिन पछिया हवा उसके बाद पुरवा हवा चलने की संभावना है। शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान धान की कटनी तथा दौनी के कार्य को उच्च प्राथमिकता देकर पूरा करने का प्रयास करें। राई, मसूर, सुर्यमुखी, लहसुन, शरदकालीन गन्ना, मटर, राजमा की बुआई प्राथमिकता से करें। सब्जियों में आवश्यकतानुसार निकाई-गुढ़ाई करें एवं कीट तथा रोग-व्याधि का नियमित रूप से निरीक्षण करें।

सुबह छाया कुहासा।

रबी प्याज की बुआई के लिए नर्सरी लगाएं किसान

रबी प्याज की बुआई नर्सरी में करें। इसके लिए एग्रीफाउण्ड लाईट रेड, अर्का निकेतन, एन 2-4-1, नासिक रेड, पूसा रेड एवं भीमासुपर किस्में अनुशंसित है। 20-25 दिनों के नर्सरी से खरपतवार की निकासी करते रहें। रबी फसल की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत के आसपास के मेड़, नालियों एवं रास्तों में उगे जंगलो की सफाई करें। गोबर की सड़ी खाद 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पुरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेरकर एवं जुताई कर मिला दें। धनियों की बुआई करें। राजेन्द्र स्वाती, पंत हरितिमा, कुमारगंज सेलेक्शन, हिसार आंनद धनियों की अनुशंसित किस्में है। पंक्ति में लगाने पर बीज दर 18-20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा लगाने की दूरी 30x20 से॰मी॰ रखें। बीज को 2.5 ग्राम बेविस्टीन प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। अच्छे जमाव के लिए बीज को दरर कर दो भागो में विभाजित कर बुआई करें।

दैनिक जागरण, दि०-25.10.25, पृ०-05

उत्तर बिहार में हल्के बादल रहेंगे, मौसम साफ रहेगा

संस, जागरण • पूसा : उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल देखे जा सकते हैं। मौसम साफ एवं शुष्क रहेगा। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि अगले चार दिन मौसम साफ रहने का पूर्वानुमान है। अधिकतम तापमान 30 से 32 डिग्री एवं न्यूनतम 21 से 22 डिग्री के बीच रहने की संभावना है। दो से तीन किमी की रफ्तार से पछिया हवा एवं दो दिन बाद से पूरवा हवा चलने की संभावना है। विज्ञानियों ने किसानों को धान की तैयार फसल की जल्द कटाई करने की सलाह दी है। गेहूं, मक्का, आलू, लहसुन, धनिया, राजमा व सूरजमुखी लगाने की तैयारी करने को कहा है।

दैनिक जागरण, दि० - 25.10.2025, पृ० नं० 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 29 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में बादल देखे जा सकते हैं। हालांकि इस दौरान मौसम शुष्क बना रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह तापमान कम होगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
25 अक्टूबर	33.1	21.0
26 अक्टूबर	33.1	21.2
	दरभंगा	
25 अक्टूबर	33.1	21.2
26 अक्टूबर	33.5	21.2
	पटना	
25 अक्टूबर	34.8	22.5
26 अक्टूबर	34.8	22.5

डिग्री सेल्सियस में

संडे पॉजिटिव कम जगह में भी इसे लगा सकते हैं किसान, सजावट में भी हैं इसकी उपयोगिता

इस साल छठ घाटों पर छठा बिखेरेगा पूसा विवि का राजेन्द्र गन्ना-7

लाल व बैंगनी रंग और गुण के कारण बाजार में है अधिक डिमांड

27/10/25 भास्कर न्यूज | पूसा पेज 17

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के गन्ना विभाग द्वारा विकसित किये गए राजेंद्र गन्ना 7 की बिक्री लगातार बढ़ती जा रही हैं। खासकर छठ व्रत करने वाले लोग गन्ना अनुसंधान संस्थान के परिसर में पहुंचकर काफी जोर शोर से गन्ने के इस प्रभेद की खरीदारी कर रहे हैं। संस्थान के द्वारा भी गन्ने के इस प्रभेद को आसपास के चौक चौराहों पर बिक्री के लिए रखा गया हैं। बता दें कि गन्ना अनुसंधान केंद्र से जुड़े वैज्ञानिकों के शोध व अथक प्रयास से राजेन्द्र गन्ना 7 को दो वर्ष पूर्व विकसित किया गया था। गन्ना का यह प्रभेद खासकर छठ व्रत में उपयोग करने एवं आवासीय परिसर व गार्डेन में लगाने के लिए ही हैं। इतना ही नही गन्ने का यह प्रभेद काफी आकर्षक रंग और रूप का दिखता है। गन्ने के इस प्रभेद को विकसित किये जाने के दौरान कुलपति डॉ. पीएस पांडे ने इसकी सराहना करते हुए कहा था कि राजेंद्र गन्ना 7 आने वाले समय में छठ पर्व के दौरान हरेक छठ घाटों पर अपनी छठा बिखेरेगा। इधर गन्ना विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक व इस प्रभेद के प्रजनक डॉ. डीएन कामत ने बताया कि राजेन्द्र गन्ना 7 का रंग लाल व बैंगनी होता हैं जिस कारण यह सुंदर दिखता हैं। यह बेलने के आकार का होता है। इसका पौधा मध्यम मोटाई तथा सीधा खड़ा रहने वाला होता हैं।

पूसा में राजेंद्र गन्ना-7 की खरी[illegible]

इसे पूजा-अर्चना में इस्तेमाल करने के लिए आदर्श बनाता, सजावट में भी उपयोगी

डॉ. कामत ने बताया कि राजेन्द्र गन्ना 7 की मुख्य खासियत यह हैं कि यह बहुत लंबा और मोटा होता है। इसमें रस की मात्रा भरपूर होती है और यह सीधा होता है। इसी कारण से यह बिहार के छठ महापर्व के अवसर पर काफी लोकप्रिय हो गया है। इसका रंग, रूप, लंबाई और मोटापन इसे पूजा-अर्चना में इस्तेमाल करने के लिए आदर्श बनाता है। इसके अतिरिक्त इसकी बागवानी और घरों की सजावट में भी काफी अच्छी उपयोगिता है। उन्होंने बताया कि बिहार के कोने कोने से गन्ना उत्पादक किसान राजेंद्र गन्ना 7 के बीज को लेकर पूसा पहुंचते रहते हैं।

दैनिक जागरण 27/10/25 पेज 3

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 29 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में बादल देखे जा सकते हैं। हालांकि इस दौरान मौसम शुष्क बना रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह तापमान कम होगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
27 अक्टूबर	33.1	21.0
28 अक्टूबर	33.1	21.2
	दरभंगा	
27 अक्टूबर	33.1	21.2
28 अक्टूबर	33.5	21.2
	पटना	
27 अक्टूबर	34.8	22.5
28 अक्टूबर	34.8	22.5

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 27/10/25 पेज 1

मॉडल के रूप में विकसित हो रहा पूसा का गोराई घाट

पूसा, निज संवाददाता। चुनावी मौसम के बाबजूद लोक आस्था का महापर्व छठ मनाने में श्रद्धालु जुट गये हैं। रविवार की शाम खरना का आयोजन होगा। तो सोमवार को शाम में डूबते एवं मंगलवार को उगते सूर्य को अर्ध्य के साथ इस चार दिवसीय महापर्व का समापन होगा। इसको लेकर तैयारियां जोरों पर है। प्रदेशों में रहने वाले भी इस महापर्व में शामिल होने अपने घरों पर पहुंच गये हैं। घाटों को दुल्हन की तरह सजाया गया है। बूढ़ी गंडक नदी में देर तक जलस्तर अधिक होने की वजह से कई घाटें इस वर्ष सूनी रहेगी। जिला प्रशासन ने भी पूसा के 9 समेत जिले कुल 123 घाटों को चिन्हित कर प्रतिबंधित किया है। बाबजूद इसमें घाटों पर मजबूरन लोग छठ पर्व मनायेंगे। वहीं इस वर्ष बड़ी आबादी अपने घरों व पोखड़ों पर छठ पर्व मनायेगी। पूसा के गंगापुर में 3, कुबौली में 2, दिगम्बड़ा पोखड़, धोवगामा में दो पोखड़ पर लोग छठ पर्व मनाते रहे हैं। यही हालात अन्य पंचायतो की कामोवेश स्थिति रही है। अन्य वर्षो की तरह इस वर्ष भी डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि परिसर स्थित गोराई घाट को आकर्षक लुक दिया जा रहा है। विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय की देखरेख में छठ पूजा समिति के कार्यकर्ता इसे मॉडल का रूप में विकसित करने में जुटे हैं। इस घाट पर आकर्षक पंडाल के अलावा भगवान भाष्कर की आकर्षक प्रतिमा श्रद्धालुओं को इस घाट की ओर खिंचती है। इस घाट पर छठ वर्ती महिलाओं के लिए चेंजिंग रूम, वाहनो के लिए पार्किंग, बिजली, पानी आदि से लैस बनाया जा रहा है। इस वर्ष बड़ी आबादी अपने घरो पर सुज्जित घाट बनाकर वहीं पूजा करेंगें।

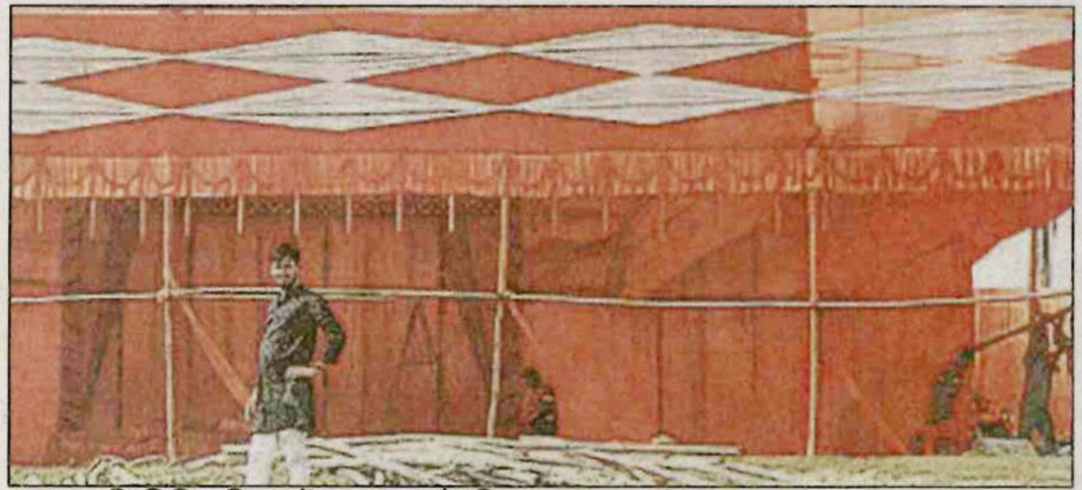

पूसा कृषि विवि परिसरमें छठ पूजा के लिए बना भव्य पंडाल।

दैनिक जागरण 29/10/25 पेज 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 29 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में बादल देखे जा सकते हैं। हालांकि इस दौरान मौसम शुष्क बना रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह तापमान कम होगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
29 अक्टूबर	33.1	21.0
30 अक्टूबर	33.1	21.2
	दरभंगा	
29 अक्टूबर	33.1	21.2
30 अक्टूबर	33.5	21.2
	पटना	
29 अक्टूबर	34.8	22.5
30 अक्टूबर	34.8	22.5

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 30/10/25 पेज 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग की ओर से 2 नवंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में बादल देखे जा सकते हैं। हालांकि इस दौरान कुछ स्थानों पर बूंदाबांदी भी होगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह तापमान कम होगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
30 अक्टूबर	27.1	21.0
31 अक्टूबर	27.1	21.2
	दरभंगा	
30 अक्टूबर	27.1	21.2
31 अक्टूबर	27.5	21.2
	पटना	
30 अक्टूबर	31.8	22.5
31 अक्टूबर	31.8	22.5

डिग्री सेल्सियस में

भास्कर 31/10/25 पेज 16

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

किसान इस माह ब्रोकोली, फूलगोभी, आलू, टमाटर व मटर की खेती से प्राप्त सकते हैं अच्छा मुनाफा : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के किसान नवंबर माह में ब्रोकोली, फूलगोभी, आलू, टमाटर, मटर, मूली, पालक, पत्ता गोभी, धनिया, आलू, गाजर, शलगम आदि की खेती कर बेहतर कमाई कर सकते हैं। इतना ही नहीं किसान कम समय में अधिक मुनाफा कमाने के लिए कम जगह में कई तरह के सब्जियों की खेती कर अच्छा से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि ऐसे तो आजकल किसान सभी तरह के सब्जियों को पॉली हाउस के नियंत्रित वातावरण सालों भर उगा रहे हैं। परंतु ऑफ सीजन में उगाएं जाने वाले सब्जियों के फसलों में रोग एवं कीट अधिक लगते है जिसे नियंत्रित करने के लिए किसानों को सब्जियों के फसल पर अधिक रसायनों का प्रयोग करना पड़ता हैं। उन्होंने कहा कि आज के दौर में बाजारों में कोई भी व्यक्ति अत्यधिक रसायनों का उपयोग कर उगाएं गए सब्जियों को खरीदना और खाना बिल्कुल पसंद नहीं करता हैं। सभी लोगों का रुख अब ऑर्गेनिक सब्जियों के तरफ होने लगा हैं। उन्होंने कहा कि किसान अगर सब्जियों को उसके सीजन के अनुसार उगाते हैं तो उन्हें सब्जियों के फसल पर रसायनों का प्रयोग काफी कम करना पड़ता हैं। उन्होंने कहा कि किसानों के लिए यह जानना आवश्यक है कि वे मौजूदा और आने वाले महीनों में किन किन सब्जियों की खेती करके बेहतर उत्पादन और लाभ कमा सकते हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि फूलगोभी एक लोकप्रिय सब्जी है तथा यह क्रूसिफेरस परिवार से संबंधित है। फूलगोभी के पछेती किस्मों को किसान नवंबर के पहले सप्ताह तक खेतों में लगा सकते हैं। पूसा सनोबल, पूसा सनोबाल 1 आदि गोभी की प्रसिद्ध किस्में हैं जिनकी बुआई कर किसान अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे तो टमाटर की खेती करीब करीब पूरे देश मे की जाती है। टमाटर की पछेती किस्मों को किसान नवंबर, दिसंबर, जनवरी और फरवरी महीने में लगा सकते है।टमाटर की देशी किस्मों में पूसा शीतल, पूसा-120, पूसा रूबी, पूसा गौरव, अर्का विकास, सोनाली आदि प्रमुख हैं। मूली की खेती मैदानी और पहाड़ी दोनों इलाकों में की जाती है। मैदानी इलाकों में इसकी बुआई सितंबर से जनवरी तक की जाती है। मूली की प्रसिद्ध किस्मों में जापानी सफ़ेद, पूसा देशी, पूसा चेतकी, अर्का निशांत, जौनपुरी आदि महत्वपूर्ण हैं। पालक की खेती ऐसे तो बारहों महीने की जा सकती है।

दलहनी फसलों में मटर का एक प्रमुख स्थान है

दलहनी फसलों में मटर का एक प्रमुख स्थान है। इसकी खेती के लिए अक्टूबर से नवंबर तक का महीना काफी उपयुक्त होता है। उन्होंने बताया कि मटर की किस्मों को दो भागों में विभाजित किया गया है। इसमें एक फील्ड मटर और दूसरी सब्जी मटर या गार्डन मटर होता है। फील्ड मटर का उपयोग दाने तथा दाल और चारो के लिए किया जाता है। जबकि सब्जी मटर का उपयोग सब्जियों के लिए किया जाता है। सब्जी मटर के प्रमुख किस्मों में आर्केल, अर्ली बैजर, बोनविले, असौजी, अर्ली दिसंबर, पन्त उपहार, जवाहर मटर आदि महत्वपूर्ण किस्म है जिन्हें किसान लगाकर बेहतर उत्पादन और लाभ दोनों कमा सकते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग की ओर से 2 नवंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में बादल देखे जा सकते हैं। हालांकि इस दौरान कुछ स्थानों पर बूंदाबांदी भी होगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह तापमान कम होगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
31 अक्टूबर	25.0	21.0
01 नवंबर	25.0	21.2
	दरभंगा	
31 अक्टूबर	25.0	21.2
01 नवंबर	25.3	21.2
	पटना	
31 अक्टूबर	27.8	22.5
01 नवंबर	27.8	22.5

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 31/10/25 पेज 6

सभी कृषि विज्ञान केन्द्र, पूसा फार्म व ढोली से बीज बिक्री जारी

पूसा । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के बीज निदेशालय, ढ़ोली में दलहनी, तेलहनी के अलावा गेहूं का बीजबिक्री जारी है।विवि नेइस वर्ष बीज निदेशालय, ढ़ोली के कृषि सेवा केन्द्र के अलावा, विवि परिसर के पूसा फार्म, विवि से जुड़े सभी कृषि विज्ञान केन्द्र एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों पर भी बीज की उपलब्धता सुनिश्चित की है। जहां से प्रत्येक कार्य दिवस को किसान बीज ले सकेंगे।मिली जानकारी के अनुसार गेहूं के डीबीडब्लू-187, डीबीडब्लू-222, एचडी 2967, डीबीडब्लू-252, डीबीडब्लू-316, डीबीडब्लू-39, सी-306, डीबीडब्लू-107, एचआई-1563, के-307, डब्लूबी-02 (राजेन्द्र गेहू-3), आरजी-4(राजेन्द्र गेहूं-4) प्रभेदों के बीज उपलब्ध हैं। विवि के निदेशक (बीज) डॉ. डीके राय ने बताया कि सभी बीज उपलब्ध है। भुगतान के लिए क्यूआर कोड की भी सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

डायरेक्टर ने किया कृषि फार्म का निरीक्षण

कल्याणपुर । डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधीनस्थ ईंख अनुसंधान संस्थान पूसा के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह, डॉ डी एन कामत सहित अन्य वैज्ञानिकों की टीम गुरुवार को कृषि फार्म कल्याणपुर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान ईंख के विभिन्न प्रभेद का निरीक्षण करते हुए संबधित वैज्ञानिकों को आवश्यक निर्देश दिया। मौके पर उग्र मोहन यादव सहित अन्य लोग मौजूद थे।

पपीता के बेहतर उत्पादन एवं कीट व्याधि प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

पपीता के बेहतर उत्पादन के लिए रोगरोधी प्रभेदों का चयन जरूरी : डॉ रत्नेश कुमार

आयोजन

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में पपीता के बेहतर उत्पादन एवं कीट व्याधि प्रबंधन विषय पर चल रहे तीन दिवसीय प्रशिक्षण प्रतिभागियों के बीच प्रमाण पत्र वितरण के साथ संपन्न हुआ. इस प्रशिक्षण में राज्य के कई जिले से एटीएम, बीटीएम तथा बीएचओ शामिल हुये. समस्या सत्र को संबोधित करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि पपीता का बेहतर उत्पादन और कीट-व्याधि प्रबंधन के लिए उन्नत किस्मों रेड लेडी 786 का चयन करने की जरूरत है. खेत में जल निकासी और स्वच्छता का ध्यान रखना भी लाभकारी होता है. कीट-रोगों के लिए जैविक व रासायनिक तरीकों का संयोजन करना चाहिए. इसमें नियमित निकाई-गुड़ाई, मल्चिंग सही समय पर उचित पोषक तत्वों का छिड़काव और रोग ग्रसित पौधों को तुरंत हटाना शामिल है. रोपण के लिए जून-जुलाई (वर्षा ऋतु) या फरवरी-मार्च (बसंत ऋतु) में पपीता लगाना हितकर होता है. खेत में जल-जमाव नहीं होने देना चाहिए. यह रोगों को बढ़ावा देता है. सही समय पर यूरिया, पोटाश, मैग्नीशियम सल्फेट और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव करें. कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वैज्ञानिक डॉ. बीरू त्रिपाठी ने कहा कि फलों और फूलों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए भीम प्लस जैसे उत्पादों का उपयोग करें. बगीचे की नियमित सफाई करें, खरपतवारों को हटाएं और रोगी पौधों को तुरंत उखाड़कर जला दें.

मल्चिंग से खरपतवार नियंत्रण और मिट्टी की नमी बनाए रखने में मदद मिलती है. पौधों पर लगने वाली चोटों से बचाव करें, ये कीटों और रोगों के प्रवेश द्वार बन सकती. परजीवी और शिकारी का उपयोग करें. चींटियां मिलीबग के शहद पर निर्भर करती है. उसे नियंत्रित करना भी महत्वपूर्ण है. वैज्ञानिक डॉ. सुमित कुमार सिंह ने कहा कि मिलीबग के नियंत्रण के लिए साबुन और तेल-आधारित कीटनाशकों का छिड़काव करें.

काले धब्बे और रोएंदार फफूंद के नियंत्रण के लिए थियोफनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डबलूपी का उपयोग करें. काले धब्बे के लिए सुरक्षात्मक कवकनाशी का नियमित उपयोग करें. बेनेविया कीटनाशक जैसे अनुशंसित कीटनाशकों का लेबल पर दिए गए निर्देशों के अनुसार उपयोग करें. बीजों को विषाणु-रोधी उपचार देने से भी रोगों से बचाव हो सकता है. मौके पर रंजीत रंजन कुमार, निधि कुमारी, निशा किरण, मारुतनंदन शुक्ला, आदित्य पांडेय, चंद्रमौली आदि मौजूद थे.

प्रमाण पत्र वितरण करते वैज्ञानिक .

गन्ने की एकल गांठ प्रदर्श करते वैज्ञानिक .

शरदकालीन गन्ना की खेती में अंतर्वर्ती फसलों की अपार संभावना : डॉ. बलवंत

पूसा . डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित ईख अनुसंधान संस्थान के फॉर्म में मिल क्षेत्रों से गन्ना उत्पादकों के साथ एकल गांठ गन्ना के सीडलिंग पर प्रत्यक्षण किया गया. ईख अनुसंधान संस्थान निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह के नेतृत्व में सतत विकास के पथ पर अग्रसर है. इस दौरान संस्थान के वैज्ञानिक सह विभागाध्यक्ष डॉ. बलवंत कुमार ने गन्ने के साथ भिन्न-भिन्न प्रभेदों के फसलों की अंतर्वर्ती खेती को किसानों के लिए लाभकारी बताया है. डॉ. कुमार ने बताया कि गन्ना के बेहतर उत्पादन शारदकालीन एवं बसंतकालीन में ज्यादातर किया जाता है. अंतर्वर्ती खेती के लिए शारदकालीन गन्ना की खेती से किसान बेहतर आय प्राप्त कर सकते हैं. अंतर्वर्ती फसल मुख्य रूप से हसनपुर क्षेत्रों में हजारों एकड़ में विवि के संस्थान से नवीनतम प्रभेदों के बीज लेकर किया जाता है. इसमें ज्यादा किसान गन्ने के साथ मूली, धनिया एवं आलू की खेती की जा रही है. मोहिद्दीननगर में एकल गांठ की खेती विस्तार रूप से की जाती है. शारदकालीन में राजेंद्र गन्ना-1 की खेती बेहतर उत्पादन देने में सक्षम है. सतमलपुर के किसान अनिल कुमार ने भी वैज्ञानिक विधि से अंतर्वर्ती फसलों खेती कर नजीर पेश किया है. इनके खेती से हजारों किसान तकनीकी ज्ञानवर्धन कर बेहतर आय प्राप्त कर रहे हैं. बिहार में ईंख अनुसंधान संस्थान के सहयोग से हरित क्रांति के बाद अब मीठी क्रांति का भी आगाज हो चुका है. हसनपुर शुगर मिल क्षेत्र के गन्ना उत्पादक संजीव कुमार, मिथलेश कुमार तथा संजय झा ने विवि के संस्थान से एकल गांठ लेकर रोपाई करते हैं. फिलवक्त गन्ने की 16 प्रभेदों पर सब्सिडी दी जा रही है. बिहार सरकार की ओर से गन्ने की एकल गांठ की खेती पर 15 हजार ऑनस्पॉट 15 हजार अनुदान भी दे रही है. जो गन्ना उत्पादकों के खाते में सीधे भेज दी जाती है. मौके पर संस्थान से जुड़े वैज्ञानिक आदि मौजूद थे.

Prabhat Khabar 031-10-2025